

श्री मंगलकलश कुमारनो रास.

Contraction of the State of the

पुण्यफल महातम्य मय. ए विवेकी पुरुषतुं चरित्रः

समस्त

सम्यक्दृष्टि सज्जनोने वांचवालायक जाणीने,

श्रावक शाव जीमसिंह माणुके,

मुंबईमां

निर्णयसागर नामक मुजालयमां बाळकृष्ण रामचंज्र घाणेकर पासे मुजित कराव्युं हे.

संवत १९६६-सन १९०९

॥ अथ ॥

॥ श्री मंगलकलदा रासः प्रारच्यते ॥

॥ दोहा ॥

との意と

॥ प्रणमुं सरसति स्वामिनी।कविजन केरी माय ॥ वीणा पुस्तक धारिणी। कवियणने वरदाय ॥ १॥ काश्मीरें जग जाणीयें । मातानुं ऋहि ठाण ॥ बीजुं मरुधर देशमां। ऋजारीयें मंनाण ॥१॥ मनशुद्धें प्रण-मी करी। मागुं वयण विलास ॥ जेम मुजने सुख जपजे। पूरो मननी श्राश ॥३॥ मंगलकलश कुमार-नो । रास रचं मन रंग ॥ देज्यो वयण शोहामणुं । मुफ मन बहु जुठरंग॥४॥ वही प्रणमुं निज गुरु सदा 🛨 जेहनो बहु उपकार ॥ ते गुरु उपकारी सदा । जेम जगमां जलधार ॥५॥ उत्तमना गुण वरणवे। श्राखं-डल महाराज॥देवसनामां हे बेसिनें। एम नाखे जिन-राज ॥६॥ उत्तमना गुण बोखीयें। कीजें तीरथ यात्र॥ दान सुपात्रें दीजीयें। निर्मेख होवे गात्र ॥ ॥ श्री जिन धर्म पसाउदों। पामी बहुद्वी क्रिः ॥ सुख जोग-वी संसारनां। श्रविचल पाम सिद्धि ॥ ।।। तेणे कारण

जिवयण तुमें। सुणजो सरस संबंध ॥ श्राखस श्रंगें परहरी। मूकी घरना धंध ॥ ए ॥ जणतां सांजलतां थकां। करतां बहु वखाण ॥ दिन दिन दोलत संपजे। जयलही कल्याण ॥ र०॥ कोण नयरी कोण देश-मां। कीधां उत्तम काम ॥ सावधान थइ सांजलो। जेम पामो सुखधाम ॥ ११ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ राग काफी ॥ श्रलबेलानी देशी ॥ ा। जंबुद्वीपमां जाणीयें रे खाख । दक्तिण जरत श्र-जिराम ॥ सुखकारी रे ॥ तिहां माखव देश वखाणीयें रे लाल। इबलानो श्राधार॥ सुखकारी रे॥१॥ गिरुवो मो-हन माखवो रे खाख। सवि देशनो राजान ॥सु०॥ न-दीय नवाण जिहां घणां रे लाल । उपजे बहुलां धान ॥ " ख़ु० ॥ २ ॥ गिरुवो० ॥ जिहां जिनवरनां सुंदरु रे बाब । मोहोटां सोहे प्रासाद ॥सु०॥ कबश ध्वजा करी शोजता रे खाख । उंचा गगनशुं मांडे वाद ॥ ।।सु०।।३।। गिरु० ।। धर्मशाला घणी देशमां रे लाल । सुख पामे त्र्यणगार ॥ सु० ॥ पुण्यवंत श्रावक जिहां घणा रे लाल । सूधा समकित धार ॥ सुख ॥ ।।। ॥ गिणा चार अंदार तस्वर तणी रे लाल। फूली र-ही वनराय । सुणा नित्य वरसाखो जाणीयें रे खाख।

सरस घणी अंबराय ॥ सु० ॥ ५ ॥ गि०॥ नगरी छ-क्रेणी जाणीयें लाल । अमरावती अवतार ॥ सु० सुखिया लोक तिहां वसे रे लाल। चोराशी बाजार॥ ॥ सु०॥ ६॥ गि०॥ राज्य करे तिहां राजीयो रे लाख । वैरिसिंह जूपाल ॥ सु॰ ॥ शूरवीर ने साइसी रे लाल । जीवदया प्रतिपाल ॥ सु० ॥ ७ ॥ गि० ॥ सोमचंद्रानिध नारजा रे लाल। राणी ग्रणमणि ला-ण ॥ सु०॥ राजाना मनमां वसी रे लाल । बोले म-धुरी वाण ॥सुणाण।गिणा व्यवहारी मांहे वखाणीयेंरे लाल । धनदत्त शाह जदार ॥सुण। जैन धर्मनी वास-ना रे लाल । नगर तणो शणगार ॥ सुणाए॥ गिणा सत्यनामा नामें नामिनी रे खाल। शीलालंकृत देह ॥ सुणा तस कूखें होरु न उपजे रे खाल । मोहोटो श्रव-गुण एह ॥ सु० ॥ १० ॥ गि०॥ पुण्यथकी ते पाम-हो रे लाल । श्रति उत्तम संतान ॥सु०॥ पुष्पश्री स-वि सुख संपजे रे खाल । पुण्यश्री नवे निधान ॥स० ॥११॥गिण। देव गुरुनी बहु रागिणी रे लाल । कोम-लजाति स्वजाव ॥सु०॥ सावधान यइ साचवे रेखा-ल । दान शीयल तप जाव ॥ सु० ॥ १२ ॥ गि० ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिन धनदत्त चिंतवे । मुज घरे बहु ही कि ॥ मोहोटां मंदिर माद्यीयां। पण नहीं बाद्यक सिकि ॥ १ ॥ गलह हो देइ करी। बेठो धनदत्त शाह । ततक् ण सत्य जामा जणे। ए ग्रुं छुः ख तुम नाह ॥ १ ॥ के चिंता व्यापारनी। के रुट्यो माहाराज ॥ वाहण नाव्यां पाधरां। के वृद्धी बीजुं काज ॥ ३ ॥ साचुं कहे जो साहि बा। छुः खनुं कारण एह ॥ कहुं बुं दासी तुमतणी। मुज उपर धरी नेह ॥ ४ ॥ शेठ जणे सुणो सुंदरी। छुः खनुं कारण तेह ॥ बाद्यक नाहं को इ तुम तणे। घरनुं मंगन जेह ॥ ५॥ शेठाणी वृद्धनुं जाे । सुण तुं जीवनप्राण ॥ बाद्यक चिंता म म करों। तमें हो चतुर सुजाण ॥ ६ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ राग केदारो ॥

॥ पुष्य करो तमें पीयुजी। पुष्यथी फल श्रीका-र रे। इह नव परजवें सुख बहे । धरमधी जय जयकाररे॥१॥ पुष्य करो तमें पियुजी ॥पुणा देव गुरुनी सेवा करो। द्यो तमें पंचविध दान रे॥ जेह-थी जग जस विस्तरे। दान ते सुक्ति निदान रे॥श॥ ॥ पुण॥ दानशाखा मंमावियें। पूजीयें श्री श्रादि- नाथ रे । पुस्तक नवुं रे खखावियें । साहामी वत्सख प्राणनाथ रे ॥३॥ पु०॥ पौषधशाला मंनावियें। धरी-यें वली धर्मनुं ध्यान रे ॥ एम करतां पियु श्रापणें । जपजे जत्तम संतान रे ॥ ४ ॥ पु॰ ॥ श्री शत्रुंज**य** गिरिनारनी। कीजियें जात्रा खास रे॥ सूरजकुंम-मां नाहियें। जेम फक्षे वंबित आश रे ॥ ए॥ पु०॥ साधुने नित्य पडिखाजियें। कीजियें परउपकार रे ॥ लखमीनो लाहो लीजियें। सफल करो अवतार रे ॥ ६ ॥ पु० ॥ करो पच्चस्काण नित्य पोरसी । सांफें करो छुविहार रे ॥ जगवंतनी पूजा करो । पडिक्रम-णां बे वार रे ॥ ७ ॥ पु० ॥ धर्म सुरतरु सम जाणि-यें। धर्म चिंतामणि जाण रे॥ श्ररिहंत समवसरणें करे। धर्मनां सबस वखाण रे॥ ए॥ पुणानारी व-यण मनमां धरी। धर्में हुउं उजमाल रे ॥ मासीने फूलने कारणें। धन बहु दे ततकाल रे ॥ ए॥ पुण। धनदत्तशाह मन थिर करी । धर्म करे दिन रात रे ॥ श्रादरी वस्तु न मूकियें । उत्तम खद्मण जात रे ॥ १० ॥ पु० ॥ श्री जिनधर्म प्रजावस्री । त्रूठी ते शासन देवी रे ॥ तस तणी कुखें उपजावियुं। पुत्र-रयण ततखेव रे ॥ ११ ॥ पु० ॥

(६)

॥ दोहा ॥

॥ सत्यत्रामा एकण समे । सूती सेज मोजार ॥ नीरजस्वो रूपातणो। कलश दीठो तेणि वार॥१॥ अनु-करमें सुत जनमीयो। जिमानी परिवार ॥ नाम दीघुं रहीयामणुं। मंगलकलश कुमार ॥१॥ श्राठ वरषनो ते हुर्छ। तव मूक्यो निशाल॥ अति रूपें रखीयामणो। कोमल नयन विशाल ॥३॥ पुण्यश्री बहु सुख उप-न्युं। चिंते धनदत्त शाह ॥वसी विशेषें आदरे । धरम करम जत्साह ॥४॥ फूल क्षेत्राने कारणें। जाउं वामी मांहिं ॥सज्ज थइने नीसस्यो, तव वखग्यो बाखक बां-हि ॥ ए॥ पिताजी तमें दिन प्रतें। सिधावो शे काज॥ वामी मांहे फूलने । जिनवर पूजा काज ॥६॥ मं-गल साथें नीसस्यो। जाणे देव कुमार ॥ बहु आजरणें **अलंकस्वो । अदञ्जत रूप अपार ॥ १॥ मासी दे**खी चिंतवे । बालक रूप श्रपार ॥ कर जोडी कहे होठने । कोण ए राजकुमार ॥ ७॥ शेव जणे ए माहरो। बेटो कुल मंडाण ॥ ग्रुज लक्तणें करी जाणियें । होशे च-तुर सुजाण ॥ ए ॥ मास्री वाडीमांहेथी । फल य्या-प्यां श्रीकार ॥ मंगल मनमां इरखीयो । पहेरी चंपक हार ॥१०॥ जिनवरनी पूजा रची । मांडी मोहोटो था- ल ॥ जमवा बेठा बेहु जणा। बाप बेटो सुरसाल ॥ ॥ ११ ॥ इवे मंगलकलश कुमार ते। नित्य नित्य वा- की मांहि ॥ फूल लावे अति फूटरां। मन धरतो उ- त्साहि ॥ ११ ॥ एम धरम करम करतां थकां। दि- न दिन अधिको वान ॥ आगल अचरज उपजे। ते सुणज्यो सावधान ॥ १३ ॥ आगल अति रलीयाम- णी। वात घणी रंग रोल ॥ सांजलतां चतुरा मने। उपजे अधिक कल्लोल ॥ १४ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ चोपाइनी देशी ॥

॥ तरतकेत्र तिहां चंपापुरी। धन कण कंचन सुज-रं तरी॥ राजा तिहां सुरसुंदर नाम। राज्य करे जा-णे श्रीराम ॥१॥ गुणें करीने श्रात श्रातिराम। राणी गुणावली जेहनुं नाम ॥ स्वप्नमांहि ते निज उत्संग। कल्पवेलि दीठी मन रंग॥१॥ देखीने जागी ततका-ल। तिहां श्रावी ठे ज्यांहि जूपाल। राजाने ते वाहा-ली घणुं। वयण कहे ते रलीयामणुं ॥ ३ ॥ स्वामी सुपन तणो सुविचार। मुजने कहेजो प्राण श्राधार॥ राजा कहे सुपन परमाण। पुत्री होशे गुणनी खाण ॥ ४ ॥ नव मासें ते पुत्री जणी। श्राशा पूरी माता तणी॥ दिवस बारमे श्राति श्रातिराम। त्रैलोक्य- सुंदरी दीधुं नाम ॥५॥ शोख वरसनी कुंवरी हवि । चोसठ कला जाणे अजिनवी ॥ के जाणुं पाताल कुमा-रि। विद्याधरी अमरी अवतार ॥६॥ घरने आंगणे कर-ती केलि। जाणे साची मोहन वेलि॥ सवी राणीने वा-हाबी तेह । ते उपर सहुनो बहु नेह ॥७॥ राजायें इसी दीठी जाम। वरचिंता मन पेठी ताम॥ ए सरखो वर जोतां मखे। तो मनवं छित सघलां फखे ॥ ए ॥ तव राजा त्र्यंतेजरमांहि। पाज धास्वा मन धरी जस्ता-हि ॥ सघ ही राणी जे ही करी। पूछे राजा मन हित धरी ॥ ए ॥ त्रिलोक्यसुंदरी कुमरी जेह । तरुणपणुं पामी गुण गेह ॥ ते माटे करवो वीवाह । खरची ध-नने सीजें खाह ॥ १०॥ रुडुं जाणी करज्यो काज। श्रमने शुंपूठो माहाराज ॥ सुरसुंदर राजा एम जणे। बेटी नुं कारण तुम तणे ॥ ११ ॥ राणी सघली जोमी हाथ। कहे सांजलो तुमें प्राणनाथ ॥ घूर म देज्यो ए-हने सही। स्रम जीवितथी ए वाह्यही ॥१२॥ महारा जानो वडो प्रधान। तेहनो बेटो रूप निधान॥ तेहने देजो ए दीकरी। जेम नित्य नयणे निरखुं खरी॥१३॥

॥ दोहा ॥ ॥ सुबुद्धिने तेडी करी। एम बोसे राजान ॥ तुम सुत- ने मुज नंदिनी। दीधुं कन्यादान ॥१॥ मंत्री कहे तुमें द्युं कह्युं। ए ऋणजुगतुं काज॥ देज्यो मोहोटा रायने। सुणो तुमें महाराज ॥२॥ राजा कहे सुण मंत्रवी । माहारुं वयण प्रमाण ॥ करवुं सही तमने घटे । म करो ताणो ताण ॥ ३ ॥ मंत्री मनमांहे चिंतवे । ए केम थारो काज ॥ एकण दिरो तटिनी वही। एक दिशे मृगराज ॥४॥ मुज नंदन हे कोढियो । सटित पटित जस देह ॥ रूपें रंजा ऊर्वशी । नृप पुत्री गुण गेह ॥ ५ ॥ एहने ए परणावतां । केम रहेशे मुज खाज ॥ कांइक मतिबुद्धि केखवी । बुद्धे कर**शुं काज** ॥ ॥ ६ ॥ त्र्याराधुं कुल देवता । साधुं ए ग्रुज काम ॥ जेम तेम करीने माहरी। रुकी राखुं माम ॥ ७ ॥ ॥ ढाल चोथी ॥ फुंबखमानी देशी ॥

॥ एम चिंतवी निज मंदिरें रे। श्राव्यो सुबुद्धि प्रधान ॥ सोजागी सांजलो। श्राराधी कुल देवता रे। बेठो एकण ध्यान ॥ सो०॥ १ ॥ श्रष्ठमनुं तप श्रादरी रे। जाप जपे सुविचार ॥ सो०॥ कृष्धागरु जलेवीयें रे। दीप धूप घृत धार ॥ सो०॥ श॥ बीजे दिन ते देवता रे। श्रावी रहि तस पास ॥ सो०॥ कहो कि-ण कारणे मुज समरी रे॥ बोली मनने जल्लास ॥

सो ।। ३॥ मंत्रीश्वर कहे मातजी रे। तुमें जाणो सवि वात ॥सो०॥ रोग रहित बेटो करो रे। देही श्राणो धात ॥ सो० ॥ ४ ॥ चौद पहेडी दिन प्रतें रे। जीनी रहे दिन रात ॥ सो० ॥ रक्तपित्त व्या-प्यो घणुं रें। रोगनी विषमी जात ॥ सो० ॥ ५ ॥ पर जव एणे जीवडे रे। कीधां कर्म अघोर ॥सो०॥ कर्म न बूटे देवता रे। जीवने कर्मनुं जोर॥सो०॥ ॥६॥ कर जोडी करुं विनति रे। लली लली लागुं पाय ॥ सो० ॥ लगन लीधं दिन सातमे रे । तेहनो करवो जपाय ॥ सो० ॥ छ ॥ रुको ने रखीयामणो रे । जातिवंत गुणवंत ॥ सो०॥ एहवो वर तुमें आणज्यो रे। जेम छुर्जन न हसंत ॥ सो०॥ ए॥ राजकन्या पर-णावीने रे। त्र्याणद्यं मंदिरमांहि ॥सो०॥ पर्छे कल विकल करी काढ्युं रे। एहने साहि बांहि ॥सो०॥ए॥ वलतुं कुलदेवी वदे रे । सुण तुं सुबुद्धि प्रधान ॥ सो० ॥ चंपापुर पूरव दिशें रे । चंपकनामें जया-न ॥ सो०॥ १०॥ घोंमा शीखे राजला रे। तेह तणा रखवाख ॥ सो० ॥ ते पासें तुमें जाणज्यो रे। नान-मीयो सुकुमाल ॥ सो० ॥ ११ ॥ टाढें घर हर धु-जता रे। सुंदर कोमल काय ॥ सो० ॥ मंदिरमां- हें लावज्या रे। ए कह्यो तुमने जपाय ॥ सो० ॥ १२॥ एम कहीने गोत्रज वली रे। हरख्यो सुबुद्धि प्रधान ॥ सो०॥ विवाहनां कारण जणी रे। मंडप रचे अस-मान ॥ सो० ॥ १३ ॥ घोडाना रखवाखने रे । जे हे विश्वावीश ॥सोण। तेहने तेमीने कहे रे। ग्रुज वय-णें मंत्रीश ॥ सो० ॥ १४ ॥ तुम पासें एक आवशे रे। बालक रूपनिधान ॥सो०॥ ते मुज मंदिर लावज्यो रे। एम बोखे परधान ॥ सो० ॥ १५ ॥ मंत्रीश्वरनी गो-त्रजा रे। रुडुं रचीने विमान॥सो०॥ वर जोवा आ-वी तिहां रे। उक्केणी उद्यान ॥ सो०॥ १६ ॥ जिहां वामी राजातणीरे। फूल घणां महकाय ॥ सो०॥ ते परिमल क्षेत्रा जाणी रे। बेठी रुमे ठाय ॥ सो० ॥१७॥ तेहने को देखे नहीं रे। ते देखे सब खोय ॥सोण। तिहां त्रावे नरवर घणा रे। जे जोगीसर होय ॥सो०॥ ॥१७॥ घनी बे घनी बेसी रही रे । दीठा जनना इंद ॥ सो०॥ एहवो कोइ निरख्यो नहीं रे। जे हुए नय-नानंद ॥ सो० ॥ १ए ॥ मंगल त्राव्यो मलपतो रे । जाणे देव कुमार ॥सो०॥ ततक्तण हरखी देवता रे । वर पाम्यो निरधार ॥सो०॥१०॥ ए कन्याने योग्यता रे। ए वर रूपनिधान ॥ सो०॥ जोडा वेमो सरिखो मसे रे। जगमां वाघे वान ॥ सो० ॥ ११ ॥ फूख खेइ पाठो फिस्चो रे। नगर तणी श्रंतराख ॥ सो० ॥ तव बोली कुलदेवता रे।एणि परें वयण विशाख ॥सो०॥ ॥ ११ ॥ फूल जलां जस हाथमां रे। जे ठे चतुर सु-जाण ॥ सो०॥ ते राजकन्या परणशे रे। जाडे सिह करी जाण ॥ सो० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एह वयण श्रवणें सुएयुं । पण नव दी द्वं कोय ॥ मंगल मनमां चिंतवे । ए केहेनी वाचा होय ॥१॥ श्चरहुं परहुं जोतो थको। मनमां घणो संज्ञांत ॥ मंदिर जइ निज तातने। कहेशुं एह वृत्तांत ॥ २ ॥ जणवा केरे कारणें। वीसरी गइ सा वात॥ बीजे दिवसें देव-ता। बोक्षे एहीज वात॥३॥चिकत थइ चित्त चिं-तवे । मंगल जोई जाम ॥ वादल वाउली यइ घणुं । घोर घटा घन ताम ॥ ४ ॥ वाजली ते जोरें चढी । श्रति उंची श्रसमान ॥ क्रमरने खेइ नीसरी । जाणे देव विमान ॥ ५ ॥ चंपापुरने परिसरें । ते श्राएयो सुकु-माल ॥ मूकीने ते वही गई । ततक्कण थइ विसरा-ल ॥६॥ जूल तृषा लागी घणुं। मंगलने तेणि वार ॥ जमतां जमतां पेखीयुं । सरोवर वनह मकार ॥९॥

॥ढाल पांचमी॥ गोयम घिनय म करे प्रमाद् ॥ए देशी॥ ॥ सरोवर पासें अति घणाजी। फल फूल्या सह-कार ॥ सजल सरोवर देखिनेजी। पाम्यो हर्ष छपार ॥१॥ सुगुणि नर पुण्य करो सुखकार ॥ ए श्रांकणी ॥ पुएयें सबि सुख उपजेजी। जेम जलधरथी जल सार ॥ सु०॥२॥ नीर गलीने वावस्त्रं जी । एश्रावक त्रा-चार॥कष्ट पडे धीरज धरेजी। धन्य तेहनो श्रवतार ॥ सु०॥ ३ ॥ बेसीने फल वावस्वांजी। पाकी आंबा साख ॥ करणां दाडिमनी कलीजी। वली कसमसि-या द्राख ॥ सु॰ ॥ ४॥ उक्तेषी नगरी किहांजी। किहां ते मालव देश ॥ किहां जाउं को एने कहुं जी। ए दीसे परदेश ॥ सु०॥ ५॥ एम करतां रविष्ठाय-म्यो जी। चंदो करे सुप्रकाश ॥ वम तरुवर जपर चढ्यो जी। जीववानी बहु त्र्याश ॥ सु० ॥ ६ ॥ ए उपर नही जपजेजी। वाघ सिंहनी रे जीति॥ ए जपर रज-नी रहुंजी। दैव थयो विपरीत ॥ सु० ॥ ।। व मशाखा छ-पर चढ्यो जी। चिहुं दिशें निरखे रे तेह ॥ दीठो उत्त-र दिशि जणी जी । विश्वानर ग्रुणगेह ॥ सु०॥ ७॥ वमवमतां रजनी गइजी । परगटीयो परजात । वड तरुवरथी उतस्वो जी। ते हे शुद्ध सुजात ॥सुण।ए॥

उत्तर दिशि जाणी श्रावतांजी। श्रमि तणे श्रमुसार ॥ चंपापुरी देखी करी जी । हरक्यो हैया मजार ॥ सु०॥१०॥ घोडा तापे राजला जी। तेह तणा रखवा-ल॥ पासें बेठो तापवा जी॥ ध्रूजंतो ते बाल ॥सु०॥११॥ ॥ दोहा॥

॥ इती जलामण जेहने । ते हरख्यो मनमांहि ॥ कोइ न देखे तेहने। तेम आखो मंदिरमांहि ॥ १॥ अवसर जाणि आणीयो । मंत्रीसरनी दृष्टि॥ उठीने नुत्रो थयो, जुले प्रधास्या श्रेष्टि ॥१॥ जूमि मंदिरमां तेमीने। श्रति घण श्रादर की ध॥ नवरावीने तेहने। मीठुं जोजन दीध ॥३॥ ठानो राख्यो तेइने। कोइन जाणें जेद। पासें जइने एम कहे। मनमां म आणी-श खेद ॥ ४॥ एक दिन पूछे तातजी । छानो राख्यो केम ॥ कुल निव जाणो माइरं । मुज उपर केम प्रेम ॥ एक दिन पूछे मंत्रीने। कवण पुरि कोण देश ॥ कोण राजा कोण मंत्रवी। ए जांखों सुविशेष ॥६॥ ।। ढाल वर्छी ।। नणदलनी देशी ॥ तथा ॥ एणे अव सरें चंपक माला ॥ ए देशी ॥

॥ श्रमीय समाणे वयणमे। बोखे सुबुद्धि प्रधान हो ॥ मंगख ॥ वात सुणो एक माहरी। श्रंग देश चंपापुरी।

सुरसुंदर राजान हो॥मंगख०॥१॥ राजकृद्धि श्रति तेह-नें,सुणतां ऋचरिज याय हो॥मंण।सुबुद्धि नामें प्रधान बुं। राजाने सुखदाय हो ॥मं०॥१॥ नृपनी राणी गुणा-वली। रूपतणो जंडार हो ॥ मं०॥ बेटी त्रैलोक्यसुं-दरी । रंजतणो अवतार हो ॥ मं०॥ ३ ॥ एक दिन माहरी जारया। में दीठी दिखगीर हो ॥ मंणा डुः खनुं कारण पूछतां। नयणें करे बहु नीर हो॥ मं० ॥४॥ गदगद सादेंजी बोखती । तुम घर नहिं सं-तान हो ॥मं०॥ बीजुं डुःख मुजने नहिं। ए डुःखरु असमान हो ॥ मंणाए॥ आराधी कुखदेवता। कीधा त्रण उपवास हो ॥ मं० ॥ प्रगट थइ कुलदेवता ॥ बोली वयण विलास हो ॥ मं०॥ ६ ॥ समरण की-धुंजी माहरुं। कोण कारण परधान हो ॥मं०॥बो-ख्यो हुं कर जोडीने। द्यो मुज पुत्रनुं दान हो ॥मं०॥५॥ वलतुं ते देवी जणे, नही तुज जाग्यमां पुत्र हो ॥ मं० कुल दीपक कुल मंगणो । जे राखे घरसूत्र हो ॥ मं० ॥ ७ ॥ एक लख्यो हे ताहरे । कोढीने कुरूप हो ॥ मं०॥ रक्तपित्त रोगें जस्बो । जाणे जूत खरूप हो ॥ मं०॥ ए॥ पोतानी महिला प्रते । वात चित्त लाय हो ॥ मं०॥ तेह कहे एहवो जलो । वांजणी

गाल न खमाय हो ॥ मं० ॥ १० ॥ वाचा देइ गइ देवता । पेट रह्युं उधान हो ॥मं०॥ पूरे मासें जन-मीयो, कोढ व्यापित संतान हो ॥ मं० ॥ ११ ॥ घर घर हुआं वधामणां। वाग्या जांगी ढोख हो ॥ मं० ॥ राजा प्रजायें जाणीयुं। पुत्र हुर्ड रंगरोल हो ॥ मं० ॥१२॥ राजसनामांहे मूरखें। में कही वात विचार हो ॥ मं० ॥ मुज नंदन ऋति फूटरों । जाणे देव कुमार हो ॥ मं० ॥ १३ ॥ ठानो राख्यो में मंदिरे । किऐं निव दीठो एह हो ॥ मं०॥ बाहेर वात सहु करे। मंत्रीसुत गुणगेह हो ॥ मं०॥ १४॥ हठ करी तृप सुरसुंदरे । निज पुत्री गुण्वंत हो ॥मं०॥ दीधी मुज नंदन प्रतें। जे हे बहु रोगवंत हो ॥ मं०॥ १५॥ वली श्राराधी गोत्रजा। जापें श्रावी तेह हो ॥ मं० ॥ तेणियें तुजने श्राणियो। मुज उपर धरी नेह हो ॥ मं० ॥ १६॥ ए कन्या परणी करी। मुज सुतने चो सार हो ॥ मंण॥ पाय पडुं विनति करुं। ए करो तुमें ज-पकार हो॥ मं०॥ १९॥ मंगलकुंज वलतुं वदे। ए नहिं उत्तम काम हो ॥ मं०॥ परणीने केम दीजीयें। कन्या गुण्तुं धाम हो॥मं०॥ १०॥ रोष करीने मं-त्रवी, हाथे यही तरवार हो ॥ मंण॥ नहीं परणे तो मारद्युं। कोण करशे तुज सार हो ॥मं०॥ १ए॥ जक्जे-णी घूरें रही। किहां माहारो परिवार हो ॥मं०॥ सिंह सवल पण सांकछो। किंद्यो करे उपचार हो॥ मं० ॥ २० ॥ जवितव्यता योगें करी । हुं आव्यो एण देश हो ॥मं०॥ श्राकाशवाणी सांजली । तेणें करी सुविशेष हो ॥ मं० ॥११॥ मंगल कहे मंत्री सुणो । ए नहिं रु-मानुं काम हो ॥ मं० ॥ पण तुम प्रतें चाले नहिं। तुमने कीजें प्रणाम हो ॥ मं० ॥ ११ ॥ कर मेखाव-ण राजवी। जे मुजने चे दान हो ॥ मं० ॥ घोमा हा-थी रथने नेजा। बीजी वली वस्तुवान हो ॥मं०॥ १३॥ ए तुमें मुजने श्रापजो।तो तुम करशुं काज हो।।मं।।। **उज्जयणीने मारगें । ते तुमें मूकजो राज हो ॥मं**णारधा। तब मंत्री हरखें करी। कीघुं वयण प्रमाण हो॥मं०॥व-चमां हे घाली गोत्रजाते हे चतुर सुजाण हो।।मंगाश्या ॥ दोहा ॥

॥ मंगलकलशें हा जणी। करवा उत्तम काज ॥ मनमां हरख्यो मंत्रवी। मुज त्रूठो माहाराज ॥ १ ॥ उंचे शब्द हुउ तिसें। वली वाग्यां नीशाण ॥ गीत गा-उ सोहासणी। विवाहनां मंडाण ॥ १ ॥ धें धें नोबत गमगमी। वली वागी किरताल।। होल ददामा दहदडी। न्नेरी ताल कंसाल ॥ ३ ॥ सघलां वाजां वाजियां । हा जणी जेणी वार ॥ मंगल वाणी जबली। हरख्यो सवि परिवार ॥४॥ तंबू डेरा ताणिया, ऋति उंचा श्याकाश। लाल कथीपा चंडूया। मोहोटा मंमप खास ॥५॥ बां-ध्या मोती जूमणां। गोखतणी वली खोल ॥ सखर समारी जूमिका। चिहुं दिश पोढी पोख ॥६॥ फूल घणां पथरावियां । मांड्या सोवन पाट ॥ वरराजा इहां बेसरो । मलरो माणस थाट ॥७॥ चिहुं दिशि गांचे गोरकी । नाचे नवलां पात्र ॥ सद्ध जोवाने त्यां मब्युं । करवा वरनी जात्र ॥ ७ ॥ राजायें पण मां-डियुं । विवाहनुं मंमाण ॥ मख्या मोहोटा महिपति । माणस राणो राण ॥ए॥ घर घर ग्रडी उन्नला । बां-धी तोरण माल ॥ सहेर सवि शणगारियुं। दीसे जाक कमाल ॥ १० ॥ आडंबर सबलो करी। मांड्यो मो-टो जंग॥(इवे) वर जोवाने कारणें। सहुने मन उठरंग ॥ ११ ॥ नवरावी निज हाथशुं। पहेरावी शणगार ॥ हवे पधरावी कुंवरने । साथें सहु परिवार ॥ ४२ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ मधुकरनी देशी ॥ ॥ लक्षनां रे वात सुणी मन हरखीयो । सुरसुंदर राजान ॥ ख०॥ वर जोवाने कारणें । मोकख्या निज प- रधान ॥१॥लण। मस्तक मुकुट हीरे जड्यो । कंठे ए-कावल हार ॥स०॥करणात्रूषण जसहसे। बाजू-बंध मनोहार ॥ २ ॥ ख० ॥ हाथे सोवर्ण सांकलां। मिणिमय जडित जडाव ॥ ख० ॥ श्रंगें वाघो विरा-जतो । केशरमें गरकाव ॥ ३ ॥ खणानीखी पटोखी प-हेर्ले । पहेरी सवि शणगार ॥ख०॥ चरणे नेपुर रण-फणे। घूघरना घमकार ॥ ४॥ ल०॥ कुमरने वेगें व-धावीयो । मोतीडे जरी थाल ॥ल०॥ गोरीगावे सोह-क्षे । नानडबी सुकुमाल ॥५॥ ल० ॥ नर नारी मोही रह्यां । देखी कुंवरनुं नूर ॥खणा सामुं जोइ कोइ नवि शके। जाणे ऊग्यो सूर ॥ ६ ॥ खणा साजन सवि जन नोतरी । जमाडी जरपूर ॥ ख० ॥ फोफल पान दिये घणां। वाजे मंगल तूर ॥ आखणाघोमा हाथी स-ज करी । जुगतें चलावे जान ॥ल०॥रुमी परें धन वा-वरे। मन हरखे परधान ॥ ७ ॥ खण। आगल की धी गुजघटा । सांबेखां नहीं पार ॥ ख० ॥ पोतें वरघोडे चढ्यो । जाणे इंद्रकुमार ॥ ए ॥ ल० ॥ जान जोवा-ने तिहां मछां। नरनारीनां वृंद ॥ ख०॥ देखी रूप कुमारनुं । मन धरता श्रानंद ॥ १० ॥ ख०॥ धन्य ते . ब्लोक्यसंदरी । धन्य एहनो श्रवतार ॥ खणा पूरवने

युएयें करी। पाम्यो ए जरतार ॥ ११ ॥ ख० ॥ जान श्रा-वीने तिहां रही, वाजंते निशान ॥ ख०॥ कुंवर स्वरूप देखी करी, राजा थयो महराण ॥११॥ ल० ॥ राजा मनमां हे चिंतवे, मख्यो जमाइ चंग ॥ ल० ॥ सोना केरी मुद्रकी। उपर जकीयुं नंग॥ १३॥ ल०॥ हरखी त्रैलोक्यसुंदरी। राणी मन जत्साह ॥ ल० ॥ गातां वातां हरखद्युं । आएयो माहिरामांहि ॥ १४॥ छ०॥ लगन तणी वेला हुई। जोषी मेलावे हाथ ॥ लण। मंगलकलशें मोजमां । जाख्यो जमणो हाथ ॥ १५॥ ख॰ ॥ क्षण पासुं मेखे नही । सुबुद्धि नाम प्रधान ॥ ख०॥ रखे ए कोइ त्रागलें, वात करे स्रज्ञान ॥ ॥ १६॥ ल०॥ श्रक्तर लखीया हाथमां। सुंदरीयें तेणी वार ॥ ख॰ ॥ मुज पिताकने मागजो, पंच तुरंगम सार ॥ १९ ॥ खं ॥ मंगल लखे जतावलो । कुंवरीना करमांहि ॥ ल० ॥ जाडे परणुं हुं सही, ते धरज्यो मनमांहि ॥ १० ॥ ख० ॥ एह स्वरूप जाणी करी। कुंवरी मन दिलगीर ॥ ल० ॥ लाजें बोली निव श-के। नयणें नाखे नीर॥ १ए॥ छ०॥ वाजां वाजे श्चिति घणां। गाये गोरी गीत॥ ख०॥ दानज दीजें श्च-ति घणां।ए विवाइनी रीत॥ २०॥ छ०॥ कर मेहलाव- ण कुंमरने । दीधा धन जंडार ॥ख०॥ मंगल कर मे-क्षे निहं । मागे पंच तोखार॥११॥ ख०॥ ते पण ली-धा हरखशुं । दीधां छादर मान ॥ ख०॥ परणीने ज-तावली । पाठी फरी ते जान ॥ ११ ॥ ख०॥ मंगल साथें पदमिणी । दासीने परिवार ॥ ख०॥ गातां वातां छावीयां । प्रधाननें दरबार ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पंच तुरंगम जल पंथा।बीजा ऋर्य जंमार॥ज-ज्ञयणीने मारगें। ते मूक्या तेणि वार॥१॥ मंदिर श्चाव्यां हुकडां। (जव) पोंसें कियो प्रवेश ॥ ए नर इहां-थी कार्ढियें । तो जाये परदेश ॥१॥ कुंवरी कर मेहसे नही। चलचित्त जाणी जाम ॥ देह चिंता मुज उपनी। मंगल बोले ताम ॥ ३ ॥ रथयकी ते उतस्वो । साथें कुंवरी जाय ॥ पाणी जरी कारी यही । मनमां चिंता थाय॥ ४॥ क्षण बेसीने उठीयो । श्रावे कुंवरी पास॥ ततक्तण त्रावी परवरी। ससरानी सवि दास॥ ५॥ कुंवरी मनें धीरज धरी । पूठे प्राणाधार ॥ जूख लागी वे तुम तणे। में जाण्युं निरधार ॥ ६ ॥ सिंह केसरा श्रति मीग सुरसाख ॥ ७ ॥ वावरतां ते खारुश्रा ।

मंगल बोख्यो धीर ॥ जिल्लायणी नगरी तणुं। जो होय क्तिप्रानीर ॥ ७ ॥ तो जरे ए लामुख्या । एहवुं बोले जाम ॥ ततक्षण नर परधानना। खाव्या तेणें गम ॥ ए॥ वयण सुणीने सुंदरी। मनद्युं करे विचार ॥ उज्जयणी मांहि जाणियें। कांहिक सगपण सार ॥ १० ॥ देह चिंता मुज जपनी। वली जिल्ला जेणि वार ॥ ते पण साथें जत्तरी। दासीने परिवार ॥ ११ ॥ कहे मंगल सु-णो सुंदरी। जारी खापो हाथ ॥ लाज घणी मुज जपजे। जो तुमें खावो साथ ॥ ११ ॥ चार घमी रजनी ग-इ। तव ते नाशी जाय ॥ जिहां घोडा रथ खापणा। तिहां ते जेला थाय ॥ १३ ॥

शहाल आठमी शकोयलो परवत घूंधलोरेलाल शए देशी श ढडेरे प्रयाणें त्यां हां थकी रे लाल । मन धरतो उछाहरे श सुगुण नर शघोडा रथ लेड करीरे लाल । आठ्यो उज्जयणी मांहि रे शसुण मंगलकल शघर आवीयो रेलाल । गुण्ह तणो जंडाररे शसुण । तेह ने कोणे निव ओलख्यो रे लाल । रूप कला अंबार रे शसुण मंग । योताना मंदिर कने रे लाल । आठ्यो ते जेणि वार रे शसुण। धनदत्त शाह हवे चिंतवे रे लाल । ए कोण राजकुमार रे शसुण। मंग् ॥ ३ ॥ ततक् ण रथथी जतरी रे लाल । पाय ते ला- ग्यो जाम रे ॥ सु०॥ धनदत्तशाहें जीकीयो रे लाख़। जीलखीयो सुत ताम रे ॥ सु०॥ मं० ॥ ४ ॥ माताने वल्ली जह मह्यो रे लाल । वरसे श्रांसु धार रे ॥सु०॥ हरखें बोली निव शके रे लाल । माता तेणी वार रे ॥ सु०॥ मं०॥ ५ ॥ हरख्यां ते मनें श्रति घणुं रे लाल । नारीने जरताररे ॥ सु०॥ के मन जाणे श्रापणुं रे लाल । के जाणे किरतार रे ॥ सु०॥ मं०॥६॥ घोका बांध्या पायगें रे लाल । रथ मेह्यो शुज ठाम रे ॥सु० धनदत्तशाहने धन सोंपियुं रे लाल । जणवा बेठो ताम रे ॥ सु० ॥ मं० ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वात कही निज तातनें। एकांतें धरी प्रेम ॥ घोमा धन रथ राखजो। एहथी खेहेशुं खेम॥१॥ मन चिंते नृ-प नंदिनी। नाव्यो प्राण श्राधार॥ शंकीतो नासी गयो। शुं कीधुं किरतार ॥ १॥ पेटपीम तणे मिशें। ते बेठी तिण्ठाय। मनमां फूरे श्रति घणुं।श्रांसुमां उत्तराय॥३॥

॥ ढाल नवमी॥ राग केदारो॥ गोमी॥ ॥ श्रेणिकराय एहवो हुं रे निर्यंथ॥ ए देशी॥ पियु नाठो जाखो जिस्यें। वागीरे लहेर ऋपार॥ पेट तणी वेदना मिशें।नाखे रे ऋांसुमां धार॥ १॥ जीवनजी तुं मुज प्राण व्याधार । कांइ मेहेसीरे मु-जने निरधार । तुं हेरे माहारा हैडानो हार ॥ जीवण। तुज विण शूनो रे सहु संसार। तुं हे रे माहारो सवि शिणगार॥जी०॥१॥ श्रक्तर लखिया परणतां । ते तें सा-चा कीध ॥ एणे अवसर मुज ठोमतां। तें बहु डुःख रे श्रबलांने दीध ॥ जी०॥ ३ ॥ जल विना जेम माठ-खी । टखव**खे तेह अपार ॥ ततक्**ण दासी परवरी। त्यां त्रावीरे मंत्रिनी नार ॥ जी० ॥ ४ ॥ रसजर र-ह्यां रे माणसां। ते डुःख सबद्धं थाय ॥ रस खेइ कूचा करे । ते छुःख रे घोडेरुं घाय ॥ जी० ॥५॥ उसड वे-सड सवि कस्चां, ज्ञीतल ढांट्युं नीर ॥ वींजणे वायु वींजतां, तस वाख्युं रे चेतन शरीर ॥ जी०॥ ६ ॥ रु-दन करंती बाखिका। को नवि जाणे जेद ॥ विरह व्यथा तस जब्लसी । त्र्यति घणो रेमनें छाणे खेद ॥ ॥ जी० ॥ ७ ॥ गीरिवर जदर चढावीने । तें धरी ना-खी ध्रसकाय ॥ जोजन सरस पीरसी करी । तें खीधी रे थाली उठाय ॥ जी० ॥ ७ ॥ वात न को पूछि श-की । मुज हुती घणी त्राश ॥ को न करे ते तें कखुं, तो तुजने दें जंरे साबाश ॥ जी० ॥ ए ॥ पालखीयें वेसारीने। श्राणी मंदिरमांहि ॥ सासु ससरो त्यां करे।

(१५)

श्चोसड वेसड रे वाही मनने उत्साहि ॥ जी०॥ १०॥ ॥ दोहा ॥

॥ कोढी शय्या उपरें। श्रावी बेठो जाम ॥ ततक्षण ते देखी करी। कुंवरी निरखे ताम॥१॥ इवे कोढी ते सज यइ। पहेरी मंगल वेश।।लडयमतो छावी तिहां। मोहोद्धें कियो प्रवेश ॥ १ ॥ तिहां त्रावी उनी रही। जिहां हे सखी परिवार ॥ देखी आमणङूमणी। बोलावी तेणि वार ॥ ३ ॥ रुदन करंती बालिका । कहे ते सघली वात ॥ रजनी ज़रंतां गइ। परगटियो पर-जात ॥ ४ ॥ रथ बेसी उतावेली, आवी जिहां निज माय ॥ श्रावी केम तेड्या विना । मुज मन श्रचरिज थाय ॥ ए ॥ डुःखजर ठाती फाटती । रुए ते सरसे साद ॥ माता कहे सुणो सुंदरी। एवडो श्यो विखवाद ॥ ६॥ गद गद सादें ते कहे । रात तणुं वृत्तांत ॥ ते निसुणी सवि वारता । मात हुइ जयच्रांत ॥ ७ ॥ बुचकारीने बाक्षिका । बेसारी धरी नेह ॥ आसन वासन सहु करे। राणी गुणावली तेह ॥ ए॥ कोढी कुंवरने कारणे । एहवो करी प्रपंच ॥ परनर करतां पा-कुवो । नीच नाणे खलखंच ॥ ए॥ प्रात समे परधा-न ते। श्राव्यो राजा पास ॥ मुखें निसासा मेखतो। म- नमां थई निराश ॥१०॥ राजा पूछे मंत्रीने। बेसारी
सुसनेह॥ मुज आगल साचुं कहो। छःखनुं कारण जेह ॥ ११ ॥ मुज नंदन कंचन जिस्यो। तुमें दीछो महाराय। आजूनी अधरातिमां। विण्ठी तेहनी काय
॥११॥ रक्तपित्त तस उपन्यो। देव थयो विपरीत॥
विनय करीने वीनवे। एह वमानी रीत॥ १३॥
॥ ढाल दशमी॥ काची कली अनारकी रे हां॥

सुमा रह्या रे बुजाय ॥ ए देशी ॥

॥ राजा कहे मंत्री सुणो रे हां। जीवनें कर्म प्रमाण ॥ कर्म विमंबना ॥ वीतराग एम उपित्से रे हां। जो त्रिजुवननो जाण ॥ कर्म ० ॥ १॥ कर्म करे ते होन्य ॥ क०॥ विणजोगव्यां छूटे नहीं रे हां। मंत्री विचारी जोय ॥ क० ॥ १ ॥ निमित्त कारण मुज नंदनी रे हां। विष कन्यानी जाति ॥ क० ॥ जे माटे एम जाणीयें रे हां। उपन्यो रोग अधराति ॥ क०॥ ३ ॥ जिनशासन मांहें जाणियें रे हां। निश्चय ने व्यवहार शिका। निश्चय जाणे केवली रे हां। लिश्चय ने व्यवहार हार ॥ क० ॥ ४ ॥ जो तनया तुज पुत्रनें रे हां। जो नवि देतो एह ॥क०॥ रोग रहित देवी दासनी रे हां। विणसत नहीं शुज देह ॥ क० ॥ ४ ॥ मंत्री

कहे माहाराजजीरे हां। तुम पुत्री नहीं दोष ॥कणा कर्मनी परिणति जाणीये रे हां। म करो तुमें बहु शोष ॥ क० ॥ ६ ॥ कपट न जाणे जूपति रे हां। जेहनो सरख खजाव ॥ क० ॥ हक्षु करमो जीव जा-णियें रे हां। धर्म उपरें बहु जाव॥ क०॥ ७॥ क्र-षजदेवने जाणियें रे हां। वरसी तप उपवास ॥क०॥ मिब्रिनाथ नारीपणे रे हां। कर्म न मेहेबे तास॥ ॥ क० ॥ ७ ॥ ढंढण नामें मुनीसरु रे हां । मेतारज वली जेह ॥ क०॥ एला पुत्र वखाणियें रे हां। क-में नड्या बहु एह ॥ क०॥ ए॥ सीता सुनदा द्रौप-दी रे हां। रुषिदत्ता सुकुमार ॥ कणा श्रंजना दम-यंती सती रे हां। कलावंती वित नार ॥कणा १०॥ तेम ए त्रैलोक्यसुंदरी रे हां । त्र्यावी तेहनी जोम ॥ कण॥ एहने कलंक ए उपन्युं रे हां। दैवें दीधी खोम ॥ कण ॥ ११ ॥ सांजली मंत्री तिहां यकी रे हां। निज घर आव्यो तेह ॥ क० ॥ राजा पण राणी जणी रे हां। आव्यो ते गुणगेह ।।क०॥ १२॥ तिहां कणे एहज सांजब्युं रे हां। बेठो यइने निराश।।कण। पुण्यथकी पुष्यवंतने रे हां । फलरो सघली आश ॥ क० ॥ १३ ॥ जे हती सहुने वालहीरे हां । हुइ

(२७)

श्रवखामणी तेह ॥ क०॥ माय विना को नवि धरे रेहां। तेहज्ञुं श्रधिक सनेह ॥ क०॥ १४॥ ॥ दोहा ॥

॥ परएयो पित मेली गयो। कलंक चत्युं जगमां-हि ॥ एम बेठी फूरे घणुं । रात दिवस घरमांहि ॥ १ ॥ पूरवले जव में किश्यां। कीधां कर्म अघोर ॥ किहां जाउं कुण्नें कहुं। कर्म प्रतें नहीं जोर ॥१॥ ॥ ढाल अग्यारमी ॥ वीर वलाणी राणी चिल्लाणा जी ॥ ए देशी ॥

॥ मन विखखाणी नृप नंदनीजी॥ मनमांहे घणुं दि-खगीर ॥ मायने एणी परें वीनवेजी। नयणे जरे बहु नीर ॥ मन०॥ १ ॥ नयणें न आवे निक्रमी जी । जद-क न जावेजी अन्न ॥ चित्तमां आमण कूमणी जी । कोयग्रुं निव मखे मन्न ॥मन०॥१॥ निज देशना परदे-शनाजी। खोको मखशे खाख ॥ मंत्रीनी वात सहु मा-नशेजी। माहारी कोण जरे साख ॥ मन०॥३॥ मात ने तात वैरी थयां जी। वैरी थयो परिवार ॥ कर्में क-खंक चढावियुं जी। करवो कवण विचार ॥ मन०॥ ४॥ कहो हवे कोण आगत्वें कहुं जी। ए जुःखडानी रे वात ॥ रातनी कपटनी वारता जी। सांजलो माहारी मात ॥मनण।।।। खामुत्रा खातां मुजने कह्यं जी। जो होये किप्रानुं नीर॥ तो करे सरस ए लाडुआ जी। ते सुणी हुइ दिलगीर ॥ मन० ॥६॥ तेवारें में मन चिंतव्युं जी। किहां चंपाने बक्जेण।। मोशाखादिक ति-हां हरो जी। सांजस्त्रं कारण तेण ॥मन०॥॥ खा-जें करी सुणो मारुखी जी। पूठी न शकी कांइ वात॥ शरीर चिंतानो मिश करी जी । नाठोजी तुज जामात ॥ मन०॥॥ ७॥ रजनी मध्य गया पठी जी। श्राव्यो नर को ढियो एक ॥ ते देखी हुं नासी गई जी। सु-ण जामणी सुविवेक ॥मनणा ए ॥ श्राप हत्या करी जो मरुं जी। तो जीव डुगैतें जाय॥ पण ते कर्म न बूटीयें जी। एम जांखे जिनराय ॥ मन० ॥१०॥ क्रण सुवे क्रण रुवे बेठमी जी। क्रण एक धरे रे वै-राग ॥ एम करी निज तनु श्रावटे जी । कांचलीयें श्राव्यो रे नाग ॥मन०॥ ११॥ एम नित्य फुरतां ते-णीयें जी। कांइक वोख्या रेदीह ॥ उज्जेणी मांहे हो-होजी। मुज परएयो वरसिंह ॥मनणा११॥ तो हवे जा-उं उज्जेणीयें जी। जो हुवे तात श्रादेश॥ निज वरने जोवा जणीजी। पहेरी पुरुषनो वेश ॥मन० ॥१३॥

(30)

॥ दोहा ॥

॥ चंपावती मांहि जाणियें। जे होय ज्योतिषराय॥ तेहेने तेनी पूछीयें। सुण तुं मोरी माय॥ १॥ खगन रुं जोइ करी, कीजें उत्तम काम ॥ सिद्धि चढे उताव हुं। रहे पोतानी माम ॥१॥ निमित्तियाने तेडवा। सुंदर चतुर सुजाण॥ दासी एक त्यां मोक हो। जेहनी सुल दित वाण ॥ ३॥ ततक् ण आएयो ज्योतिषी। पेहे स्वा सिव शणगार ॥ गज जेम आव्यो मल पतो। राणीने दरबार ॥ ४॥ आव्यो देखी तेहने। राणी करे प्रणाम ॥ पूछे आसन देइकरी। श्रीफ ख

॥ढाखबारमी॥जोसियमा तुं ज्योतिष जोय ॥ ए देशी॥

॥ जोसियमाजी॥ जो लगन विचार। रुडी परें चित्त राखजोजी॥ जोसियडाजी ॥ क्यारें थाशे मुज काम ॥ ते तुमें साचुं जांखजो जी ॥१॥ जोसीयमाजी जो सरशे मुज काज। देशुं जीज सोनातणी जी ॥ जोसियडाजी ॥ देशुं हैमानो हार। देशुं रयण रुमा मणिजी ॥ १॥ जोसि०॥ देशुं सवि शणगार। हीरे जडित सोवन सांकलां जी ॥ जोसि०॥ सोनेरी शिरबंध। हरमिज केरां मोती जलांजी ॥ ३॥ जो- सिणा जोइ लगन विचार। जोसियडो एणि परे जणे जी ॥ बाइ काम होरो निरधार । शास्त्रें लख्युं वे य्य-म तणे जी ॥ ४ ॥ जोसियमानी रुमी निसुणी हो वात। श्राणी हो हरख हैये घणो जी ॥ जोसियमा जी ॥ उक्केणीए मुज मन्न। जोवाने जननी सुणो जी ॥ ५ ॥ माडी मारी पहेस्वा सवि शणगार । खयेर श्रंगार परें जाणजो जी ॥ मामी मोरी फूल ते शूल समान । जवन जाखसी सम मानजो जी ॥६॥ माडी मोरी ते दिन सफल गणीश । जे दिन तेहने निरखशुं जी ॥ मारी मोरी ते दिन क्षेत्वे जाए । जे दिन कलंक उतारद्युं जी ॥७॥ मामीमोरी विष त्रवगुण विष वांक। सुमति प्रधानें सुज दाखवीजी ॥ मामी मोरी एकपखी सुणी वात।रोष राखे रुनो राजवीजी ॥ ए ॥ माडी मोरी ए द्वःखमानी वात। कोइ श्रागक्षें नवि जांखी-यें जी ॥ मानी मोरी एडःख जांजे जेह। ते श्रागलें डुःख दाखियें जी ॥ए॥ माडी मोरी जेतां तरगस तीर । मुखतानी मुगल तणेजी॥माडीमोरी तेतां छःख शरीर। सहियें पण कहीयें नहींजी ॥१०॥मामी मोरी जोतां हो देश परदेश।नणदीनो वीरो मुजजो मखेजी॥मामी मो-री कहे सुंदरी घणे नेह।मनना मनोरथ सवि फसे जी॥

(३१)

॥ दोहा ॥

॥ एक दिन मनमां चिंतवे । नयर जक्कोणी मांहि॥जे में परएयो प्रेमशुं। ते मखरो मुज नाह ॥१॥ मोदक वावरतां कह्युं। त्र्याणो किप्रा नीर ॥ उक्केणी नयरी तणुं । तो विकसे मुज हीर ॥२॥ खोली काढुं तेह-ने । कांइक करी उपाय ॥ जो हुं जाउं उक्जेणीयें । तो मुजनें सुख थाय ॥३॥ एक दिन जननीने कहे। जो तात सुणे मुज वात ॥ एकांतें बेसी करी । तो यावे सवि धात ॥ ४॥ एकदिन सिंह सामंतनें । रा-णीयें एकांत ॥ वात कही पुत्री तणी । जेथी होय शुज शांत ॥५॥ श्रवसर जाणी वीनवे । सिंह नाम सामंत ॥ तमें ठो मोहोटा राजवी।वली ठो बहु ग्रण-वंत ॥६॥ पुत्री त्रैखोक्यसुंदरी । दुःख धरे ऋसमा-न ॥ तेहने तेडावी करी । यो प्रजु त्र्यादरमान ॥७॥ व-यण सुणि सामंतनुं। राजा हुन दीलगीर ॥ हैयुं जराणुं नृप तणुं। नयणें नाखे नीर ॥ ए ॥ कुंवरीएं पेहेसे जवे। दीधुं होरो कलंक ॥ ते कारणें एम जाणियें। पा-मी एह कलंक ॥ ए ॥ नृप त्राज्ञा सेई करी। तेडावी सा बाल ॥ लाजंती मा तेडिने । ते त्रावी ततकाल ॥१०॥ देखीने डुःख उपन्युं। ते त्रणने तेणि वार॥ घडी बे घ- डी बोख्यां नहीं। नाखे श्रांसु धार ॥११॥ कुंवरी कर जोनी कहे। यो मुजने नरवेश॥ कांहिक मोटे कारणें। ढुं चालीश परदेश ॥ ११ ॥ राजा सिंह साहामुं जुवे। ए रयुं बोले बाल ॥ सिंह जणे स्वामी सुणो। ए न्याय वयण सुरसाल ॥१३॥ पुत्री हुइ राजा तणी। पहेरी पुरुषनो वेश ॥ निज कुंवरीने एम जणे। जो जो देश विदेश ॥१४॥ सिंह सामंत साथें दियो। दीधा धनजं-कार ॥ रुडी परें ए राखजो। वली दीधा श्रसवार ॥१५॥ ॥ ढाल तेरमी॥ घरें श्रावोजी श्रांबो मोहोरीयो ॥ ए देशी॥

॥ राजकुंवरी ग्रुज मुहूरतें। पहेरी पुरुषनो वेशो रे॥ तात जननी पाय लागीने। सिक्कि करी परदेशो रे॥ रा०॥ १॥ कुंवरी कोइ जाणे नहीं। एक जाणे सामंतो रे॥ ग्रुर वीरने साहसी। गिरुवोने ग्रुणवंतो रे॥ रा०॥ १॥ शिरबंध सोहे सोना तणो। गले मोतीनी मालो रे॥ ढालज मेहेली ढलकती। ना-नडीयो सुकुमालो रे॥ रा०॥ ३॥ तरगस बहु तीरें जिख्छं। सोनेरी तरवार रे॥ लाल कवान हाथें धरी। मोही रह्यां नर नार रे॥ रा०॥ ४॥ लीलडे घोडे ते चढ्यो। लीलो वेश बनाइ रे॥ सामंतने श्रागद्य

कस्यो । जली वागी सरणाइ रे ॥ राण्॥ थ ॥ काठा करहा मजी विया । गले घूघरनी मालो रे ॥ मन मा-नी जूयें चालता। एक न लागे तालो रे ॥ रा० ॥६॥ राजकाज सवी साचवे। सिंह ते सिंह समानो रे॥ वात विचार तेह्युं करे। ते वे बुद्धिनिधानो रे ॥राणा ॥ । । अखंम प्रयाणें आवियां । क्तिप्रा नदीने ती-रो रे ॥ न्हाइ धोइ पावन थयां । जेहनुं निर्मेख नीरो रे ।।राणाणा वैरीसिंह राजा सुणी । मोकस्या निज परधानो रे ॥ मन हरखें तेनी करी। दीधां आदर मानो रे ॥ रा० ॥ ए ॥ कुंवर जले तुमें श्राविया । वृता अमीमय मेहो रे॥ सुरसुंदर राजा तणो। अ-मं उपर बहु नेहों रे॥ रा०॥ १०॥ उतारा सख-रा दीया। मनमोहन त्र्यावासो रे ॥ गोंख जाबी शत बारणां । ते छे अति सुप्रकाशो रे ॥ रा०॥ ११ ॥ ग्रुज लगनें ग्रुज मुहूरतें। मोहलें करे प्रवेशो रे॥ ख-बर खीचे दिन दिन प्रतें। वैरीसिंह नरेशो रे ॥ रा० ॥११॥ सत्तर जेद पूजा रची । जेट्या श्रीजगवंतो रे॥ अति हरस्वे पिनला जिया। सूधा साधु महंतो रे॥रा० ॥ १३ ॥ जीव बोडाव्या अति घणा । ये पंचविधनं दानो रे ॥ रात दिवस गुणिजनतणां। सांजक्षे गीतने

(३५)

गानो रे।।रा०।।१४।।वनवारी जोयां घणां। वली जोयां बाजारों रे ॥ अन्यदिवस जोतां थकां। दीठा पंच तुखारों रे।।रा०।।१५॥ ए घोडा मुज तातना। निरधारी सुविवेको रे ॥ नाम ठाम जोवा जणी। तिहां मृक्यों नर एको रे ॥ रा० ॥ १६ ॥ ते जोईने एम कहे। धनदत्त शेठ सुजाणों रे।। नामें धनवती जारजा। मंग्यलक बश सुत जाणों रे ॥ रा० ॥ १९ ॥ धनदत्त सुत पंख्या कनें। करे नित्य कला अञ्यासों रे ॥ ते पण तिहां में निरखीयों। रूप कला आवासों रे ॥ रा०॥ १० ॥ तेहना तुरंगम जाणजो। ए मांहे मीन न मेषों रे ॥ वात सुणी हरखी घणुं। सुंदरी ते सुनिवेशों रे ॥ रा०॥ १०॥ १०॥

॥ दोहा ॥

॥ सुंदरी सिंह सामंतने । तेमीने सुविचार ॥ धन आपीने लीजियें । ए पांचे त्र्लार ॥ १॥ सिंह वदे सुं-दरी सुणो । नापे बालक तेह ॥ जेम तेम तस मन रीजवी । खेद्युं घणे सनेह॥ १॥ सुंदरी कहे सामंतने । सु-णजो वयण रसाल ॥ उक्जेणी नगरी तणी । जिमा-कियें निशाल ॥ ३ ॥ धनदत्तनो सुत आवशे । देद्युं आदरमान ॥ घोना खेद्युं रीजवी । आपी तस बहु दा-

(३६)

न ॥४॥ जमण सज्जाइ सहु करी । बांध्या मंनप खास ॥ मोहोल रचाव्या श्रित घणा। जाणे देव श्रावास ॥ ५॥ सिंह सामंतने मोकल्यो । नोतरवा निशाल ॥ पंड्या सहित सहु श्रावजो। जोजनने सुविशाल ॥६॥ जोजन वेला श्रवसरें। पहेरी सिव शणगार ॥ मंगल श्राव्यो मलपतो । ठोकराने परिवार ॥ ७ ॥ मोहोल थकी ते उतरी । सुंदरी सिव परिवार ॥ निशालियाने निरखवा । हैडे हरल श्रपार ॥ ७ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥ देशी रसीयानी ॥

॥सुंदरी आवे हो निजिपयु नीरखवा। पहेरी पुरुषनो वेष ॥सुनयनी ॥ शिरपर सोहे हो पंचरंग पाघ नी। कलंगी विराजे रे विशेष ॥सुण।सुंण। रे ॥केसरियोरे अंगें वाघो बन्यो। कस्तूरी महकाय ॥सुण। फूल चंबेली हो पहेस्यां अति घणां। सहेजें सकोमल काय ॥सुण।सुंण। ॥१॥ धनदत्त सुतने हो तेणीयें उलस्यो। ए सहि मुज जरतार ॥ सुवदनी ॥ पूरव पुण्यें हो ए आवी महयो। हवे मुज त्रूट्यो रे किरतार ॥सुण।सुंण।३॥ धनदत्त सुत हो तिहां उजो थइ। कीधो तेहनें प्रणाम ॥ सुण ॥ मंगलकलशें हो ते नव उलली। नृपनं-दिनी अजिराम ॥ सुनयनी ॥ सुंदरीण॥ ४ ॥ निशा-

क्षीयाने सवि जोजन जणी । मांड्या सादा रे चाल ॥सु०॥ मंगलकलशने तेणियें मंनावियो । रूनो रूपा-नो रे थाल ॥ सुनयनी ॥ सुं० ॥ ५ ॥ बाजोठ मांड्यो रे साव सुवन तणो । ते पीरसे पकवान ॥ सुनयनी॥ जमी करीने ते सवि उठिया। दीधां फोफल पान ॥ सुनयनी ॥ सुंदरी० ॥ ६ ॥ निशासीया प्रतें दीधी पाघमी । धनदत्त सुतने शणगार ॥ सु० ॥ वाघो छा-प्यो हो अतिघणा मूलनो । आप्या वली अलंकार ॥ सुनणा सुंदरीणा ७ ॥ निशासीया हो सवि जांखा थया। देखी पंक्तिनो रे जेद ॥ सु०॥ पण कुंवरीनी **खाजें बोसी नवि शके। त्र्याएयो मनमांहि खेद**॥ सु० ॥ सुंदरी० ॥ ७ ॥ पंड्याने हो कहे नृपनंदिनी। तेहने तेमी रे एकांत ॥ सु० ॥ वात त्र्यनोपम सुण-वा मुज घणी। सरस कथानी रे खांति ॥ सुवदनी ॥ सुंदरी ।। ए॥ ते माटे हो जटजी तमें घणो। यो कोइ ठात्रने छादेश॥ सुवदनी ॥ मोहनगारी रे देश परदेशनी । कहाणी सुणावे सुविशेष ॥ सुनयनी ॥ सुं० ॥१०॥ बे त्रण ठात्रने पंडितजी कहे। कहो तमें कथारे सुसवाद ॥ सु० ॥ ते बोख्या हो मुखें त्रटकी करी। श्राणी मनें रे जन्माद ॥ सुनयनी ॥ सुं० ॥ ११ ॥ ते कहेरोजी कहाणी हरख घणे । जेहने अति घणुं मान ॥ सु॰ ॥ मंगलकलशने तेड्यो ततक्ते । जे वे ग्रणनों रे निधान ॥ सु०॥ सुंदरी० ॥ १२॥ शेवनो नंदन हो हरखें श्रावियो। नृप तनयाने पास ॥ सुनयनी ॥ रुडी परें हो रूप जोतां थकां। ठेल-खी कुंवरी जल्लास ॥ सुनयनी० ॥ सुंदरी० ॥ १३ ॥ ए राजकन्या हो कोइक कारणें। पहेरी पुरुषनो वेश।। सुनयनी ॥ चंपापुरीमांहि में परणी हती। ते श्रावी एणे देश ॥ सुवदनी ॥ १४ ॥ सुंदरी श्रावे हो निज पियु निरखवा ॥ ढाल पूरी थइ रसीया वालमनी। प्र-थम पूरो थयो खंग ॥ सु॰ ॥ श्रवणें सुणतां हो श्रति सुख उपजे । पामियें लीख ऋखंड ॥सु० ॥सुं०॥१५॥ रुडीने हो अति रिवयामणी । सरस कथा सुविलास ॥ सु० ॥ मंगल कहेरो हो बीजा खंडमां । सफल फ़ब्बी सवी त्र्याशा सुरु ॥ सुरु ॥ १६ ॥ श्रीविजय मान सूरीसरगञ्च धणी । श्री मानविजय बुधराय ॥सु० ॥ तेहनो विनयी दीप्तिविजय कहे । पुएयथी बहु सुख थाय ॥ सु॰ ॥ सुं॰ ॥ १९ ॥ इतिश्री मंगलकलशरासे प्रथम खंडः संपूर्णः ॥ १ ॥

(契()

॥ श्रथ द्वितीयखंक प्रारंजः ॥ ॥ दोहा ॥

॥ मंगल कहे कथा तणा। जेद चार सुविचार ॥ किटिपत अकिटिपत वली। अपरा पर सुविचार ॥१॥ मंगल कहे तुमें कुवरजी। सांजलजो धरी नेह ॥ पुरुष चरित्रतणी कथा। सरस सुणावुं तेह ॥१॥ पुरुषचरित्र मांहे कह्यो। शील तणो ग्रण सार ॥ नर नारी सह सांजलो। लाखानो अधिकार ॥३॥ कोण गामें कोण देशमां। केणी परं पाह्युं शील ॥ राज क्रि पामी घणी। शीलें पामी लील ॥४॥ गणिकाने कुलें उपनी। पामी यौवन धन ॥ धन्य ए लाखा सुंदरी। जेणे पाह्युं शील रतन्न ॥५॥ दीका लेइ मुगतें गइ। पामी केवलनाण ॥ शील तणा ग्रण गावतां। होवे जय कह्याण ॥ ६ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ चोपाइनी देशी ॥

॥ काबेरी नामें एक पुरी। धण कण कंचन सुजरें जरी ॥ श्रजितसेन नामें राजान। बहु गुणवंतो सु-मित प्रधान ॥१॥ राजाने राणी शत चार। रूपें रंजा तणो श्रवतार ॥ पण श्रवगुण एक तेहने घणो। पुत्र नहीं कोइ कुलमंडणो ॥ १ ॥ तेणे कारण ते बहु दुःख धरे। मेह परें ते श्रांसु फरे ॥ राणी सघली फ्रे सही। करम प्रतें को चाखे नही ॥ ३ ॥ स्रोसड वे-सड कीधां घणां । आराधन कीधां सुर तणां ॥ आ-राधी वली कुलदेवता। पण निव द्ववो सुत सेवतां ॥ ४ ॥ तेह निमित्त धन खरच्युं बहु । सुतनी वांडा करे ते सहु॥सुत कारण जला जपचार।बहु नित्य करे नारी जरतार॥५॥ एम करतां हुवां वरषज बार। राजा वृद्ध हुर्न तेणि वार ॥ रातें मध्य निद्धा परहरे । पुत्र तणी चिंता मन धरे ॥ ६ ॥ मनमांहिं चिंते राजान। कोइ राणीने न हुई संतान ॥ धनें करी बहु जस्वा जंडार । डव्य तणो निव लाजे पार ॥ ७ ॥ कृपण पणुं हवे निव आदरं। ते धन काढीने वावरं॥राणी संघद्वीने शणगार। पहेरावुं मुक्ताफल हार ॥०॥ राणी-ने नित्य नवला वेश। वडी राणीने वली विशेष॥ दान दे्ें मन धरी जत्साह।मानव जवनो खेंें खाह ॥ ए चतुराइ ते तेहनी खरी। जस उपराजे धन व्यय करी॥ एम चिंतवतां जग्यो सूर। तव वाग्यां मंगल वर तूर ॥१०॥ राजायें तेड्यो परधान। दीधुं तस बहु ख्रादरमा-न ॥ लाख एक सोनइया सार । नित काढो म म करजो वार ॥११॥ वाकीमांहिं जिननो प्रासाद। उंचो गगनछुं मांडे वाद ॥ श्रीक्षजदेवनी मूरति जिहां। पूजा र-

चावो दिन प्रतें तिहां ॥१२॥ दल वादल नामें सुविशाल । डेरा तणावो रंग रसाल॥ अति रूडी तिहां रचना करो। **ञ्चासन बेसण तिहां व**ही धरो ॥ १३ ॥ फूल पथरा-वो तिहां वली घणां। अगर तणां मांनो धूपणां॥ बां-धो मोतीनां कुमणां । रंगें रूपें रलीयामणां ॥ १४ ॥ देश परदेश तणा जन वृंद । जोवा छावे धरी छाणं-द ॥ जे देखीने करे वखाण । तेहवुं करजो चतुर सुजाण ॥ १५ ॥ राजा पहेरी सवि शणगार । सवि राणी साथें परिवार ॥ ऋावी बेठा मंगप तसें । इंड जुवन त्र्याद्युं जूतद्वें ॥१६॥ मोहोटा मूंबाखा जूपति। चोकी करें ते निज खिजमती ॥ ततक्ष तिहां तेमावे पात्र। मंमावे जोवानी जात्र॥ १९ ॥ रूपें रूमी गणिका जेह। रुडुं नाची जाणे तेह ॥ तेहने राजा दे आदेश। नाचे नवलो पहेरी वेश ॥ १०॥ कंचुक कसीया जीडे अंग।नाटक करवानो बहुरंग॥ पाचे घूघरना घमकार। जांजरनो रम जम रणकार ॥ १ए॥ त्रावी नृपने करे प्रणाम। निज ग्रहनुं तिहां बेइ नाम ॥ तिहां किण मांडे नाटारंत । इंड आगल जेम नाचे रंज ॥ २०॥ मधुरां वाजे त्र्याठ मृदंग । नाचे पात्र तिहां मनरंग ॥ ताल विणाने वली वांस- **द्धी । शरणाइ नफेरी व**द्धी ॥ ११ ॥ धप मप धोंधों मद्दल नाद। श्रालापे हुसेनी नाद॥ कोकिल सरिखो जेहनो साद। रंज सरिसो करशे वाद।।११॥ येइ थेइ कार करंती रमे। जांजरमां पगे रमजम जमे॥ परि-यच बांधी एकण दिशि । तिहां राणी देखी उल्लिस ॥ १३ ॥ राजा मोज दिए अति हसी । राणी धन आपे मन खुसी ॥ १४ ॥ लाख सोनइयानो व्यय करी। राजा मंदिर आव्यो फरी ॥ बीजे दिन पण वाडी मांहि। जमी करीने मन उत्साहि ॥१५॥ राजा नृत्य करावे प्रेम । लाख सोनइत्रा खरचे तेम ॥ एम दिन दिन प्रतें ऋधिको रंग। राजा दान दिये जबरंग ॥१६॥ एक दिवस तिहां योगी एक । वेठो अलख कहि सुविवेक ॥ अधिष्ठायक ए जिनवर तणो । रूपें रुडो रिवयामणो ॥ १९॥ काने मुद्रा हीरे जभी। काठ तणी पहेरी पावकी॥ सवा मण पहेरी गोदकी। हाथे सोवननी लाकडी ॥ २० ॥ हेम कमंडल पा-णी जरी। ठांटे सजा ते नीरें जरी॥ वाघांवर जूयें पा-थरी। बेठो श्रासन निश्चल करी ॥ १ए॥ राणी सहि-त राजा मन रंग। पाय नमें जोगीना चंग॥ अव-धूत नृपने दे आशीष। बावा लहेज्यो सबल जगीश ॥ ३० ॥ घर्मी बेघमी अणबोह्यो रही। बोसे वाणी अमृत सही ॥ तमने देखिने मुज मन्न । थयुं सदा होजो सुप्रसन्न ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ किस कारण तमें राजवी। दीसो वदन विष्ठाय ॥ ते कारण मुजने कहो । मुज मन अचरिज थाय॥ ॥ १॥ जोईयें वे प्रजु माहरें । बेटो रूप रसाल ॥ क्रुस्नदीवो क्रुल मंडणो । राज्य तणो रखवाल ॥ २ ॥ **ष्ट्राय उ**पाय कस्त्रा घणा । पण नाव्यो एक पुत्र ॥ तेहनी खाशा हे घणी। जे राखे घरसूत्र ॥३॥ योगी बोह्यो चमवडो।सुण हो तुं राजान॥पुण्यें ग्रुऊ विद्या बहे। पुण्यें यश संतान ॥ ४ ॥ मन हित आणीने करे। जे विद्यानो जाए॥ जेम रिपुमर्दन रायनें। वाध्यं कुख़ मंडाण्॥५॥रिपुमर्दन ते किहां हवो।केम हवुं तस काम॥ महेर करी मुजने कहो। तेहनी कथा अजिरा-म ॥६॥ सिद्ध कहे नृप छागक्षें। रिपुमर्दननी वात ॥ राजा राणी सांजले । जेहनो यश विख्यात ॥ ७॥ चंदेरी नगरी धणी । रिपुमर्दन ग्रणखाण ॥ राणी ए-कशो तेहनें। जेहनी मधुरी वाण ॥ ए ॥ मंत्र यंत्रा-दिक बहु कस्या। मान्या देवोने जोग॥ पण निव श्रंगज उपजे। कर्म तणे संयोग।।ए॥ सीमाना सिव त्रूपति। चांपे तेहनी सीम॥मांहो मांहे नित्य खडे। जे-म कौरवने जीम॥ १०॥ सिद्ध एक नृपने मह्यो। श्राप्युं फल श्रीकार॥ राणीने खवरावजो। गर्ज होशे निरधार॥११॥ सिद्ध गयो निज थानकें। हरख धरी राजान॥ राणीने खवरावीयुं। पेट रह्युं उधान॥११॥

॥ ढाल बीजी ॥ हमीरीयानी देशी ॥

॥ तेराणीनं जूपति । राखे जोंयरामांहि ॥ राजन जी ॥ दासी एक पासें ठवी। खिजमत करे जञ्चाहि । राजनजी ॥१॥ वात सुणो एक छात्रिनवी, सुणतां श्चचरिज थाय ॥ राजनजी ॥ रसीया जन जे सांजिसे। तेहने बहु सुख थाय ॥ रा० ॥ २ ॥ यत्न करे राणी तणां । सुतनो जाणी लाज ॥ रा• ॥ शोक्य घणी हे तेहने । रखे गलावे गाज ॥ रा० ॥ ३ ॥ राष्। पासें ते राजवी। दिनमांहे वे वार ॥रा०॥ खबर क्षेवाने का-रणें। हैडे हरख अपार ॥ रा० ॥ ४ ॥ चोकी मेखी चिद्धं दिशें। यत्न करे जली जांति ॥ राष् ॥ राजाने राणी तणी। दिन दिन श्रिधिकी कांति॥ राण॥ ५॥ एक दिन राणी विनवे। पूरण हुआ नव मास ॥ राणा प्राणनाथ तुम पुण्यथी । पूर्गी मननी श्राश ॥ रा०॥ ॥ ६॥ बेटो के बेटी होशे। करमें लख्युं फल जेह॥
॥ रा०॥ पण वधामणी सुत तणी। मोकलज्यो धरी
नेह ॥ रा०॥ ७॥ दासीने नृप शीखवे। देखाडजो
सुविवेक ॥रा०॥ कुंवरी तणी वे आंगली। कुंवर तणी
जली एक ॥ रा०॥ ०॥ राजसजामांहि राजवी।
जइ बेटो दरबार ॥ रा०॥ ग्रुज वेला ग्रुज मुहूरतें।
पुत्री जणी तेणि वार ॥ रा०॥ ए॥ वे आंगली
देखामती। आवी नृपनी पास॥ रा०॥ साहेब देज्यो
वधामणी। पुत्र तणी कहे दास॥ रा०॥ १०॥
॥ दोहा॥

॥ मनमांहि समजी रह्यो। वजमावे नीशाण॥ दीधी लाख वधामणी। मेहल्या वंधीवान॥१॥ घर घर हुत्र्यां वधामणां। बांधि वंधनमाल॥ सहेर सिव शणगारीयुं। दीसे काक कमाल ॥१॥ राजा ततक्रण तिहां थकी। ब्राव्या राणी पास॥ श्रोषध नेषज देइ करी। शिथिल करीते दासि ॥३॥ राज्य रखोपा कारणे। वानी राखी वात॥ जो ए बाहिर विस्तरे। तो नव श्रावे धात॥ ४॥ गाज्य राजी मलवा श्राव्या जेह ॥ तेहने जिमाडी करी। पधरावे सुसनेह॥ ५॥ ते राजा खिजमत करे। राणीनी दिन रात॥ बाहिर राजा नीसरे।

तालां देइ सात ॥ ६ ॥ सुतनुं नाम सोहामणुं। दे । धुं देव कुमार ॥ कुंवरी योवन वय हुइ । रूप तणो नहीं पार ॥७॥ देवकुंवर गुण सांजली। हवे मोटा राजान ॥ धन साथें हरखें करी। दे बहु कन्यादान ॥ ७ ॥ रिपुमर्दन माने नहीं। मुज सुतने लघु वेश ॥ योग्य जाणी परणा-वशुं। एम कहे वनो नरेश ॥ए॥ सोपारा पुरनो धणी। मोकले धरी सनेह ॥ निज तनया अमरावती। इकि सहित गुणगेह ॥ १० ॥ आवी जाणी तेहने। मनमां चिंतवे राज ॥ पाठी मोकलतां थकां। न रहे सुतनी लाज ॥११॥ वेश करी तिहां पुरुषनो। जूमिमंदिर धरी नेह। शुज लगनें परणावियां। नृप कुंवरी गुणगेह ॥११॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ जावननी ॥
॥ कागलीयो किरतार जणी० ॥ ए देशी ॥
॥मातपितायें स्रति जोलापणें रे। ए ग्रुं कीधुं काम ॥
ए मुग्धाने मुज परणावतां रे। केम रहेशे मुज माम
॥१॥कुंवरी राजानी एम चिंतवे रे। करवो कवण वि-

प मुन्धान मुज परेणावता र । कम रहरा मुज माम ॥१॥ कुंवरी राजानी एम चिंतवे रे । करवो कवण वि-चार ॥ ए डुःख जाणे मनडुं माहरुं रे । के जाणे किरतार ॥ कुम० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ इहांथी गाड चाढीश सांजख्यो रे ।मोहोटो एक पहान ॥ ते वच्चें मोढुं सरोबर जहें जखुं रे । पाढों जाजां जान ॥ कुम०॥ ३॥ चांपा आंबाने बहुं आंबली रे। नालेरी नव रंग ॥ ताल तमाल अगर चंदन घणा रे। नागर वेली सुरंग ।।क्रमण।।।। श्रखोम बदाम चारोली श्रारबी रे। सो-पारी ने डाख ॥ केलि खज़री नारंगी दामिमी रे। कर-मदी केरां लाख ॥कुमण। ए ॥ ते वनमांहि वनचर श्रति घणा रे। कहेतां नावे पार ॥ नदीयें पाणी नित्य खलहल वहे रे। तरुवर जार छाढार ॥ कुम०॥६॥ ते वनमांहिं सावज अति घणारे। वाघ सिंह विक-राख ॥ जरव सुवरने अजगर चीतरा रे। नाहार रींढ शीयाल ॥ क्रम० ॥॥ ते गिरि उपरें एक जगवंतनो रे। मोहोटो हे प्रासाद ॥ मांहि मूरति श्रीयादिना-थनी रे। दीठे मन श्राख्दाद ॥कुमणाण। तिहां जइ फूल लइ जावें करी रे। पूजी श्रीवितराग ॥ पढ़ी ते सरोवर पार्क्षे आवीने रे। करवो देहित्याग ॥ कु० ॥ ए। सावज वनना बहु त्यां त्रावहो रे । सरोवर पीवा नीर ।। ते वनचर गिरिगह्वर खेइ जरो रे । कोमल कुं-वरी शरीर ॥ कु० ॥ १० ॥ सांढ पलाणी रातें नी-सरी रे। पहेरी नर शाणगार ॥ राजा राणी कोइ जाणे नहीं रे । नवि जाणे परिवार ॥ कु० ॥ ११ ॥ सूर जगमते ते नृप सुंदरी रे। आवी तेह वनमांहि॥ फूल लेइ जिनवरने जेटवा रे। जिन मंदिर हे ज्यां-हि ॥ कु० ॥ ११ ॥ देव जुहारीने पाही फरी रे। नाही निर्मल नीर ॥ जहेर पलाली वन फल वावरी रे। बेटी चंपक तीर ॥ कु० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ विद्याधर विद्याधरी। धणी धणीयाणी जोम ॥ श्रावी जिनवर पाय नम्यां । स्तवन करे कर जोड ॥ १॥ गिरिश्री श्राव्यां बेहु जणां । दीठां सरोवर पाल ॥ वनराजी फूली रही। फूली चंपक डाल ॥ १ ॥ चं-पक तरु तक्षें तेहनुं । देखी श्रदृज्जत रूप ॥ विद्याधर पूछे तदा । कोण तमें कवण स्वरूप ॥३॥ बोलाव्यो बोंक्षे नहीं । हैडे डुःख अपार ॥ नयणें नीर फरे घणुं। जाणे त्रुट्यो मोतीहार ॥ ४ ॥ रुदन करंतो देखीने। विद्याधर तेणिवार ॥ मनमांहिं ते श्रटकसे। ए कुंवरी निरधार ॥ ५ ॥ प्रायें एवं जाणियें । ना-रीने लघु बाल ॥ दुःख आवे नयणां जरे । आंसुमां ततकाल ॥ ६ ॥ विद्याधर निज नारिने । कहे नारी निरधार ॥ कोइक मोटे कारणें। कीधुं रूप कुमार ॥७॥ स्त्री जाणी विद्याधरी।पूठे सघली वात॥ धुरश्रीमांनी-ने कहे। पोतानो श्रवदात ॥ ७ ॥ यतः ॥ इंसा रचं

(খুড)

ति सरे। जमरा रच्चंति केतकी क्रुसुमे ॥ चंदनवने जुयं-गा। सरिसा सरिसेहिं रचंति॥१॥ विद्याधरी कहे कंथ-नें । करो एइनो उपगार ॥ ए वे मुग्धा बालिका । को-मल रूप र्यपार ॥ ए ॥ परउपकारह कारणें । पान चूनानो संग ॥ श्राप करावे टूकडा । पर जपजावे रंग ॥ २० ॥ विद्याधर एक श्रीषधि । खबरावे मन रंग ॥ तेहने महिमायें करी। नर हुर्ड रूप अनंग ॥ ११ ॥ निज मंदिर पोहोंचाििने । विद्याधर निज देश ॥ ना-री फीटी नर थयो । ऋतिघण पुण्य विशेष ॥ १२ ॥ राजा राणी हरिवयां। वरत्यो जय जय कार ॥ ते नरघी बहु उपन्यो । राज्य तणो श्रिवकार ॥ १३ ॥ एह कथा निसुणी करी। मन त्र्यानंचो त्रूप ॥ कर-जोडीने वीनवे । तुमें ठो देव स्वरूप ॥ १४ ॥ ते रा-जाने तेणें कस्यो । कुल मंगण उपकार ॥(तेम) महे-र करी मुज उपरें। यो मुज सुत श्रीकार ॥ १५ ॥

॥ ढाल चोथी॥ चोपाइनी देशी॥

॥ सिद्ध कहे निसुणो नरराज। सीध्युं एह तमारं काज ॥ वाडीमांहिश्री श्रीफल चार। श्राणी श्रापो मुजने निरधार ॥ १ ॥ फल श्राणी नृप हाथे दीध। मंत्री श्रापे तिहां कणे सिद्ध ॥ खबरावज्यो ए फल ल- ही तुआ। चारे राणीने जुजुआं ॥ १ ॥ एम कहीने ते व्यंतर गयो। जाणे श्रति श्रानंदज श्रयो ॥ श्रनुकरमें हुआ नव मास । राजाने मन पोहोती आशा ॥ ३ ॥ एक वेला एक लगन उदार। कुल मंगण सुत प्रसव्याः च्यार ॥ जयराज ने धनराज कुमार । कीर्तिराज चो-थो वत्सराज ॥ ४ ॥ चारे जाई सरखी जोम । अंगें कोइ न दीसे खोम ॥ शोख वरसना ते जव थया। माता पिता परलोकें गयां ॥ ५ ॥ शूरो पूरो हे जय-राज । धन संपूरण हे धनराज ॥ कामण दुमण मो-हनराज । ते सवि जाणे हे कीर्तिराज ॥ ६ ॥ पुरुष त-णी जे बहोंतेर कला। जाणे शास्त्र तणा आमला॥ नर नारी सह करे वखाण । वत्सराज ते चतुर सुजा-ण ॥ ७ ॥ एकको गुण तेहने होय । तेहने गंजी न शके कोय ॥एम जाणी निव सोंप्युं राज। राजा सा-घे त्रातम काज ॥७॥ खांमाने बखें क्षेग्रं राज । एम बलश्री बोले जयराज ॥ धनराज क्रोघें घडघडे । बेद्युं राज अमें धन वडे ॥ ए ॥ कीर्तिराज बोख्यो म-न इसी।मोहनी विद्या माहारे वसी ॥ तेहनें बढें अ-में क्षेत्रुं राज । सुण हो नाइ तुं वत्सराज ॥ १० ॥ वत्सराज तव बोसे बोस । तमें त्रण हो मूरख निटो-

ख ॥ मांहोमांहे करी संयाम । तमें नव राखो कुखनी माम ॥ ११ ॥ कुंकण देश श्रवे श्रजिराम । सोपारा पुर पाटण नाम ॥ तिहां राजा हे चंद नरेश । न्याय करे नरना सुविशष ॥ १२ ॥ साथें क्षेत्र सोनइत्र्या घ-णा। तिहां जइयें ते चारे जणा॥ तेह राजा देशे जस राज। ते जाई होशे नरराज॥१३॥ वत्सराजनां वयणां सुणी । मनसा कीधी कुंकण जणी ॥ सोपारापुर पा-टण जिहां। ते चारेइ आव्या तिहां ॥१४॥ बहु परि-वारें ते परवस्था। जतारे जुजुवा जतस्था॥ राजसजा-मां चार कुमार। जइ राजाने कीध जुहार॥ १६॥ दे-खी चिकत यया सिव लोक। जोवा मिलिया थोके थोक ॥ देखी कुंवरनां सरखां रूप। मनमां श्रचरिज पाम्यो जूप॥१६॥ राजा पूछे प्रेमें करी । केहेना बेटा कोण तुम पुरी॥ ते नृपनी तिहां आणा खही। वात पूरवनी मांनी कही ॥१७॥ राजा पासे आव्या हं अ-में । न्याय करीने आपो तुमें ॥ कहे राजा तुमें सरि-खा सही । अवगुण अंगें दीसे नही ॥१०॥ ते माटे अमें करी विचार । देशुं राज्य तणो शिर जार ॥ देवा राज्य तणी करे वात।पण राजाने नावे धात ॥१ए॥ एम करतां हू आ खट मास । ते सवि नाइ हुआ नि- राश ॥ राजा कहे निसुणो मुज वात । नगरमांहि लाखा विख्यात ॥२०॥ रूपवंत धनवंत गुणगेह । ग-णिकामांहि वमी हे तेह ॥ सात पोबिने सात प्राका-र । हाथी घोका पायक सार ॥ ११ ॥ घरमांहिं वाडी श्चाराम। श्चांबा चांपा श्चति श्वजिराम ॥ गाम पांचशें ते जोगवे । स्रति स्रानंदें दिन जोगवे ॥ २१ ॥ सात त्रूमि तणे त्रावास । लाखा तिहां रहे मन ज्ञास ॥ मंदिर जपरध्वज हलहले। सो दासी तस पासें रहे ॥२३॥ शीखतणो गुण तेइने बहु । राजा राणा मा-ने सहु ॥ एक पोहोर राखे पुरुषने । लाख टका लेइ तेहने ॥ १४ ॥ चार पहोर तस पासें रहे। राज्य पो-तानुं ते सुत बहे ॥ ते दिवसें जयराज कुमार । तिहां रहेवानो करे विचार ॥१५॥ सात पोख समजावी करी। लाख टकानी येली जरी ॥ लाखा वेश्याने दरबार, आवी उनो रह्यो तेणि वार ॥ १६ ॥ ढलकती ढाल करें किरपाण। मोटां वजडाव्यां निशाण॥ लाखाने क-हे चंपकमाल। एक नर आव्यो जाक जमाल।।१९॥ लाखा कहे नरवाहन करी। ते नर लावो मन हित धरी॥ ततक्षण सामी जइने दासि। आएयो तेहने ला-खा पास ॥२७॥ खाखा तेहने करी प्रणाम ।

बेसण त्रापे ताम ॥ लाख टका तस त्रागल धरे। **लाखा वचन एवं उचरे ॥ १ए ॥ लाखा नाम कहा-**वुं एम। खाख टका खेईने प्रेम ॥ पोहोर एक राखीजे एहने । पढें पाठो मूकुं तेहने ॥ ३० ॥ एह विचार जो तमने गमे । तो मुज मंदिर रहो रंगमें ॥ एम न रुचे तो सुण महाराज । नथी अमारे तुमशुं काज ॥३१॥ वारु कहे तव राजकुमार । खाखाने मन हर्ष श्रपार ॥ टका श्रधे जंनारें धरे । जोगकाजें श्ररधा वावरे ॥ ३१ ॥ नीपाइ मीठी रसवती । बोह्री खाखा बहु गुणवती॥ जमवा बेसो राजकुमार। पिरसे श्राणी हर्षे अपार ॥ ३३ ॥ जमी करी रह्यामन रंग। आ-प्यां फोफल पान सुरंग ॥ लाखा नाहवाने मंदिरें। मृ-गमदनां जगटणां करे ॥ ३४ ॥ खाखा नाही निर्मख नीर। पहेरी आठां दक्तणी चीर ॥ करी शणगार जिसी जर्वेशी । राजकुंवरना मनमां वसी ॥३५॥ कुंवर पासें श्रावी सा जाम। रजनी पोहोर गई तस ताम॥ ला-खा कहे निसुणो महाराज। निज मंदिर पधारो राज ॥३६॥ एहवुं बोली लाखा नार । ततक् ण तेणें का-ढी तरवार ॥ में तुजने वेचाती सीध । धन आपीने दासी कीध ॥ ३७ ॥ कल विकलें लीधी तरवार। तेने

साही काढ्यो बार ॥ बिरुद पोतानुं राख्युं सद्दी । शील थकी ते चूकी नहीं ॥ ३० ॥ कोिक टका बेई बहु साज । बीजे दिनें छाव्यो धनराज ॥ दास दासीने श्रापी धन । सहुनुं राजी कीधुं मन ॥ ३ए ॥ तेहनी सह प्रशंसा करें। को कि टका तस आगल धरे॥ जै-हने जे छाप्यानी रीत । ते देतां मुज वाघे प्रीत ॥४०॥ दासीने र्वतंत्रो दीध । श्राप्युं धन सवि पात्नं बीध॥ खाख टका तस राखी करी। बीजुं पाढुं दीधुं फरी ॥४१॥ तेहने पण काट्यो कर साहि । पोहोर एक राखी जहा हि॥ मोहिनी मंत्र धरावे जेह। कीर्ति-राज छाव्यो वसी तेह ॥४२॥ विद्या पाट परंपर त-णी। जणी की धी तेहनी रेवणी ॥ पोहोर एक राखी ते-णें ठाय ।पठी पोताने मंदिर जाय ॥४३॥ ए त्रखे स-वि विखखा थया । राजाने दरबारें गया ॥ राजा जा-णी सघसी वात । तेमाच्यो तव चोथो च्रात ॥४४॥ वस्तराजने कहे राजान । तुम हाथे वेबहु विज्ञान॥ ते माटें तमने.कहुं श्रमें । खाखामंदिर जाज्यो तमें ॥ ४५ ॥ वत्स बोद्यो तव करी प्रणाम।माहारे हे प्र-जु मोहोटुं काम॥मास दिवसनी मेतल दियो। एम कहीने बीडो कर खियो ॥ ४६ ॥

(44)

॥ दोहा ॥

॥ मंदिर छावी छापणें। मन चिंते वत्सराज॥ पुरुषचरित्र कोइ केखवी। निश्चें खेद्युं राज ॥ १ ॥ वेश बनावी जगतनो । गसे तुससीनी मास ॥ हरण चर्म नांख्युं खन्ने। ढलता मूक्या वाल॥ १॥ मधु-रो राग स्रांखापतो । हाये खेइ वीण ॥ पहेली पोखें पोलिया। ते कीधा लयलीन ॥ ३॥ श्रति चतुराइ केखवी। खंघी साते पोख ॥ चिहुं दिशि जींतें जख-ह्बे। आरिसानी ओल ॥ ध ॥ ते आगल एक पोलि-यो । लाखाने दरबार ॥ तेहनी हाकेंको तिहां।जइ न शके नर नार ॥ ए ॥ रीजाव्यो रीजे नहीं । ते अति किण कठोर ॥ रात दिवस रहे जागतो । पण विश्वासी जोर ॥ ६ ॥ ते त्र्यागल भूणी करी । वेठो थइ महांत ॥ वचन विलासें रीजवी । ते कीधो ग्रुज शांत ॥ १॥ वातें तेहने रीजवी । पूछे खाखानी वात ॥ धुरथी मांनी ते कहे। खाखानों अवदात ॥ ए ॥ गाम पांचशें जोगवे । इक्षि तणो नही पार ॥ यथा तथा बोसे नहीं। सूधी समिकत धार ॥ ए॥ चांपा नामें मालणी। नित्य जाये तस पास ॥ फूल पगर क्षेत्र करी। वात करे उल्लास ॥ १० ॥ चांपाने एक दीकरो । श्रंबराज तस नाम ॥ खघुपण्यी कोइ खइ गयो । निव जाणे तस ग्राम ॥ ११ ॥ पुत्र वियोगें मालिणी । मरवा जत्सुक थाय ॥ दिलासा देइ घणा । राखे तस समजाय ॥ ११ ॥ नालेंरे पाडे रहे । चांपा मालिण तेह ॥ खरच बरच सिव पूरवे । लाखा ग्रणनी गेह ॥ १३ ॥ प्रातसमे हवे तिहां थकी । श्रावे निज घर तेह ॥ तजी वेश तापस तणो । श्रजिनव रचे ग्रणगेह ॥ १४ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ घरें छावोजी छांबो मोहो-रीयो ॥ ए देशी ॥

॥ राजकुंवर चित्त चिंतवे । कोइक करीने उपायो रे ॥ राज्य खेउं निज तातनुं । ते दिन सफल गणायो रे ॥ रा० ॥ १ ॥ कानफटो योगी थयो । विज्ञृति लगावी खंग रे ॥ नाखेंरे पांडे वही । खाव्यो मनने रंगरे ॥ रा० ॥ १ ॥ धूणी घाली बेठो तिहां। चांपाना घर पासे रे ॥ लाख लोक जोवां मख्यां । पाय नमें उल्लासें रे ॥ साख लोक जोवां मख्यां । पाय नमें उल्लासें रे ॥ रा०॥३॥ चांपानी पाडोसणी। तिहां खावी एक नारी रे ॥ खाखी पोल तणी तेणें। वात सुणी सुविचारी रे ॥ रा० ॥ ४॥ चांपा खावी पूठवा । निज नंदन वृत्तां-तो रे ॥ योगी कहे दिन तीसरे । मलहो सुत गुणवं-

(us)

तो रे ॥ रा० ॥ थ ॥ वणकारो क्षेत्र गयो । तुज सुतने सुणो माइ रे॥कुशख खेम वे तेहने। मखरो तुम सुखदा-यी रे॥ राजाहा। सगां सणीजां तस तणां। नाम ठाम सवि धारी रे॥ बीजे दिनें निज मंदिरें। श्राव्यो ते ज-यकारी रे ॥राजाउ॥ नाही धोइने करे । वणकारानो वेशोरे॥ बुद्धि घणी हे तेहने। पण हेते लघु वेशोरे॥ राणाणा। माते घोडे ते चड्यो । घूमे घूघरमालो रे ॥ वाघो पहेस्यो अजिनवो। गर्ले मुक्ताफल हारो रे ॥रा० ॥ए॥ तरगस बहु तीरें त्रखुं । हाथे लाल कबाणो रे ॥ हालज मेली हलकती।बोले मेवाडी वाप्योरे॥रा०॥१०॥ घोडे चर्माने जतावलो। श्राव्यो वड बाजारो रे ॥जिहां वणुकारा उतस्या। ते आव्यो तेणि वारो रे ॥राव॥११॥

॥ दोहा ॥

॥ जाडे वणकारा तणा । सिधा बसद हजार ॥ श्रांबो नाम धरावतो । नायकमां शिरदार ॥ १॥ डेरा दीधा बागमें । बसद सरोवर पास ॥ पायक सिव चोकी करे । चिहुं दिशें मूकी नास ॥ १॥ वत्सराज वसी केसवे । पुरुष चरित्र रंग रोस ॥ सांजसतां चनुरा मनें । श्रावे श्रधिक उद्घोस ॥ ३॥ वत्सराज श्र-जिनव करे। पुरुष चरित्र सुविशेष ॥ सेशे राज्य पिता

तणुं। तेमांहि मीन न मेष ॥ ४॥ ठाव जरी फल फूलनी। माली लाव्यो एक ॥ तेहने देखी आवतो। चरित्र करे सुविवेक॥ ४॥

॥ ढाख ठिं।॥ वींठीयानी देशी॥

॥ लाल लघु लाघवी कला करी। त्र्यांलमां घाले तेल रे ॥ लाल मुखें नीसासा मेलतो । नयणें जरे जलरेल रे ॥ १ ॥ लाल वाहाली लागे मुज माडली । जेम वाहाली मुज देह रे॥ लाल रात दिवस मुज सांजरे। जेग्रं अति घण नेहरे॥ लाल वाण॥ १॥ खाल संसारमां सगपण घणां । पण स्वारश्रीयां सब कोइ रे ॥ लाल नरनारी सहु जाएजो । मात समो नही कोइ रे ॥ लाल वा० ॥ ३॥ आर्या वृत्त म् ॥ जणणीए जम्मजूमि । पश्चिम निदा सुजासियं वयणं ॥ मण इठं माणुरकं । तिन्निवि गिरुष्टाइं गिरु श्राइं॥ १ ॥ ढाल पूर्वेली ॥ लाल जन्म जूमि मुज सांजरी। स्राज्यो यौवन वेश रे ॥ खाख कुटंब यात्र कर-वा नणी। हुं आव्यो एणे देश रें॥ लाल वाण॥४॥ लाल कर जोडी माली जाए। एवकुं डुःख तुम कांइ रे ॥ बाब नाबेरे पाडे रहे। चांपा माखण मुज माइ रे॥ लाल वाणाया लाल वणकारा मुज लेइ गया। नान-

पणाथी तेमी रे ॥ खाल विरह पड्यो माता तणो । कोणें नव कीधी केमी रे ॥ लाख वा० ॥६॥ लाल बेटो करी मोहोटो कस्चो।वणकारे अनिराम रे॥ लाल श्राव्यो हुं मलवा जणी। श्रंबराज माहारुं नाम रे ॥ लाल वाo॥ ९ ॥ लाल जइने दीधी वधामणी । चां-पाने तेणिवार रे ॥ लाल चांपा आवी दोमती । आ-व्यो सविपरिवार रे॥ लाल वा०॥ ।।।।। लाल सहु आवी तेहने मह्यां। कोइ न जाएं जेद रे॥ खाख पुरुष त-खी बहोंतेर कला। जाणे सघला जेद रे॥ लाल वाण **ાણાલાલ चांपा देखी रे श्रावती। साहमो गयो ततका-**खरे ॥ खाख मा बेटो सांइं मख्यां । जोवे ते बाख गोपाल रे ॥ लाल वाण ॥१०॥ लाल क्रिक देखी वेटा तणी। वली देखी तस नुर रे ॥ लाल चांपा मालण लाल चांपा सुत तेनी करी। घरे आएयो धरी राग रे ॥ खाल नर नारी सुद्ध एम कहे । चांपानुं वम जाग्य रे ॥ लाल वा० ॥ १२ ॥ लाल पाडा पर् डोशी सहु मद्यां। सहु आंबो कहे एह रे॥ लाल नायक सहुने खोलखे। नाम ग्राम ग्रेण गेह रे॥ लाल वा ।। १३ ॥ लाल श्रांबो कहे सुणो मातजी। में

(६০)

श्राएयुं बहु धन रे ॥ लाल खार्ड पीर्ड विलसो घणुं। वालो देही वान रे ॥ लाल वा० ॥ १४ ॥ लाल जो-जन करी उतावली । लेइ चंपकनो हार रे ॥ लाल लाखाने मलवा जणी । हैडे हरख श्रपार रे ॥ लाल वा० ॥ १५ ॥ बेटो कहे सुणो माडली । शीद पधारशो राज रे लाल ॥ ते तमें साचुं जांखजो । शे कामें शे काज रे ॥ लाल वा० ॥ १६ ॥ लाल जागुं लाखाने मंदिरें । जेहगुं श्रतिघण प्रेमरे ॥ लाल देगुं तेहने वधामणी । ते सुख पामे जेम रे ॥ लाल वा० ॥ १९ ॥ लाल लाला ते कोण जाणियें । सुत कहे कहो मुज वात रे ॥ लाल चांपा मांडी धुरशी कहे। लाखानो श्रवदात रे ॥ लाल वा० ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रंबराज पोतें रचे। फूल तणो एक हार ॥ मा-ताजी तस श्रापजो । कहेजो माहारो जुहार ॥१॥ ह-रख धरंती नीसरी । श्रावी लाखा पास ॥ दीधी पुत्र वधामणी । लाखा मन जल्लास ॥१॥ हार देखीने श्र-जिनवो । लाखा मन बहु रंग ॥ कहो बेनी केनो र-च्यो । श्रति सुरजी ने सुरंग ॥ ३ ॥

(६१)

॥ ढाख सातमी ॥ राग केदारो ॥ ॥ मुज नंदन ऋंबराजिये रे । ए गूंथ्यो वर हार ॥ लाखा कहे माली नही रे। वे कोइ राजकुमार रे॥१॥ वेनी सुण तुं माहारी वात । तुं मुज सखी विख्यात रे॥ वेणासुणा जल्यो गएयो परदेशमां रे। रुमो ने रूपवंत ॥ ए बाई सही जाणज्यों रे। मुज सुत बहु गुणवंत रे॥ बहेनी सुण्णाशा नसें बाइ तुज उपन्यों रे। सुतश्रा-व्ये श्रानंद । ताहारी सवि श्राशा फली रे। पूर गयां डुःख दंद रे ॥ बेंo ॥ ३ ॥ चांपा त्रावी निज मंदिरें रे। सुतने कहे सवि वात ॥ श्रंबराज वलतुं जणेरे। ज्ञद्धं कीधुं तमे मात रे।।बे०॥४॥ नायक विज्ञानें करी रे। फूल तणो वरवेश ॥ फूल तणी सामी रची रे। कं-चुक रचे सुविशेष रे ॥ बे०॥ ए॥ पंच रंग फूल तणी करे रे। रचनानी जली जांत। नरनारी मोही रहे रे। ते-हनी देखी जात रे॥ बे०॥ ६॥ मृगमद अमरने जर्बे रे। ते वास्यो जली रीत ॥ माताने कहे आपजो रे। खाखाने धरी प्रीत रे॥ बे ०॥ ७॥ खाखा अंगें पहे-रीने रे। तुजने देशे गाम ॥ के आजरण तुम अजि-नवुं रे। के देशे बहु दाम रे॥ बे०॥ ०॥ ते मत खेजो मातजी रे। इव्य तणी नहीं खोड ॥ जो हुं बेटो ता- हरो रे। आणुं धननी कोड रे॥ बे०॥ए॥ लाख टका क्षेट्र करीरे। नरने राखे तेह ॥ पोहोर लगी केणे कारणें रे। ते तमें पूछजो एह रे॥ बे०॥ १०॥ चांपायें
आगल धस्यो रे। फूल तणो शणगार ॥ पहेरी मन
रीजी घणुं रे। हैंडे हरख अपार रे॥ बे०॥ ११ ॥ माग
माग लाखा जणे रे। तुजने दें जं बहु दाम॥के जूषण दें जं
अजिन कुं रे। के कोह रुद्धं गाम रे ॥ बे०॥ ११ ॥
चांपा कहे मुज नंदने रे। आएयुं इव्य अपार॥पण एक
पहोर नरने तमें रे। राखो कवण विचार रे॥बे०॥१३॥
॥ दोहा ॥

॥ पहोर पढी राखो नहीं । नरने लाखा राय॥ एह वात मुजने कहो। मुज मन अचरिज थाय॥१॥ ए मागुं ढूं तुम कने। ते तमें करो पसाय॥ महेर करी मुज उपरें। मुज मन वंढित थाय॥ १॥ फिट तुं जूंकी बहेनकी। तें ग्लुं माग्युं एह॥ एम करतां तुजने रुचे। तो हुं संजलावुं तेह॥३॥ एक दिन मुज ज्ञानी महयो। में पूढी तस वात॥ पूरव जवनो माहरो। कह्यो सघलो अवदात॥ ४॥ ज्ञानीयें मुजने कह्या। पूरव जव संबंध। ते सुणजो मन थिर करी। मूकी घरना धंध॥ ५॥

॥ ढाल श्राठमी ॥ हमीरानी देशी ॥ ॥ विंजावन जंगख वसे । तिहां विंध्याचल गिरि राय ॥ सखी रे ॥ जार श्रदार तरुवर तणी । फू खि रही वनराय ॥ सखी रे ॥ सुणो वात सोहामणी। सुण-तां आएंद याय ॥ सखी रे ॥१॥ ए आंकणी ॥ वाघ सिंह ने रोफमां । साबर वानर रींठ ॥ सखी रे ॥ जंगखी नर हबसी रहे। काला मोटा जिन्न ॥ सखी रे ॥१॥सु०॥ रेवा जल खलहल वहे । जेहनुं निर्मेख नीर ॥स०॥ पंखी घणां की का करे। सारस मोरने कीर ॥ सखी रे ॥ ३ ॥ सुणो० ॥ रात दिवस साखिर चरे । हाथी-नां बहु बृंद सखी रे ॥ रेवा जलें जी से सदा। मन धरता त्र्यानंद ॥ सखी रे ॥ ४ ॥ सुणो० ॥ मातो मद मत्त घूमतो। तेऐं वने एक गजराय॥ सखी रे॥ सो हा-थणीशुं परवस्त्रो । मोहोटो कोमल काय ॥ स० ॥५॥ ॥सु०॥ ते गजने एक हाथणी। टोखानो राणगार ॥संगा तेहची छालगो नवि रहे। पूरव प्रीति छापार ॥ सखी रे ॥ ६ ॥ सु० ॥ बेहु जणां जलकीडा करे। नेलां चरवा जाय । सखी रे ॥ हाथणी बेसे जेणें थकें। गज बेसे तेणे ठाय ॥ सखी रे ॥ ७ ॥ सु०॥ सालीर चरी पाठो फरे। टोला सहित गज राय ॥

(६४)

सखी रे॥ अन्य दिवस ते हाथीयो। मदवश महा-तो याय ॥स०॥७॥सुणोगा ते हायणी मेहली फरी। बीजी केडे धाय ॥ सखी रे॥ मुलगी जे हे हाथणी। विरहें ट्याकुल थाय ॥ सली रे ॥ ए ॥ सुणो० ॥ कोतरमांहि कोधें पनी। वाहलो ते वैरी थाय।। सखी रे॥ कोध तणां फल करुवां। कोधें छुगैतें जाय॥ सखी रे ॥ १० ॥सुणा कोतरमांहि पनतां थकां । प्राण गया तेणी वार ॥सखी रे॥ तेह हाथणी ग्रुज जावथी। हुं हु-इ खाखा नार ॥ सखी रे ॥ ११ ॥ सुणो० ॥ हाँची-नो जीव तिद्धां थकी। मरीने माणस थाय॥ सखी रे ॥ मलशे ते तुजने सही । एम करतां सुखदाय॥ स॰ ॥ ११ ॥ सुणो॰ ॥ खावा पीवा नित्य नव नवां। नित नित नवला मित्त ॥ सखी रे ॥ पण ते गज निव विसरे। कण कण आवे चित्त ॥ सखी रे ॥ १३॥ सुणो० ॥ शील पाल्लं मन दृढ करी । बेठी देें उं दा-न ॥ सखी रे ॥ रात दिवस रहुं मोहोलमां । हाथी-नुं मुज ध्यान ॥ सखी रे ॥ १४ ॥ सुणो० ॥

॥ दोहा ॥

॥ वात सुणी लाखा तणी। मालण आवी गेह ॥ वेटाने कहे धुरथकी। संजलावे धरी नेह ॥ १॥ वे-

(६५)

चण वस्तु तणे मिशें। घोडे यइ श्रसवार ॥ तांडुं साथें खेड्ने । जिहां श्राव्यो बाजार॥२॥ जार्सु चोर्डु चूकवी। निज घर आव्यो तेह। हरख धरीने वली करे। पुरुष चरित्र वसी एह ॥ ३॥ चितारो थइ संचरे। श्राव्यो चहुटामांहि ॥ श्रजिनव रूप चित्री तिहां । मांडे धरी जन्नाहि ॥ ४ ॥ फिरंगी कीधा फूटरा । विलंदा ऋति लाल ॥ शिर टोपी मदफू तणी । ढल-ता कानें वाल ॥ ५ ॥ लाखानी दासी तिहां । चंबेसी जस नाम । चहुटे दीठो तेणीएं । चित्र कला श्रजि-राम ॥ ६ ॥ खांखाने दासी कहे । तेहनां बहु वखा-ण ॥ चित्रशासी चित्रावीए । ते वे चतुर सुजाण ॥ ७॥ तेमी आएयो तेइने । मंडाव्यां चित्राम ॥ चतुरचि-तारा चित्रजे। देशुं तुज बहु दाम ॥ ७ ॥ चितारो निज चातुरी । प्रगट करीने ताम ॥ विंकावन रेवा लिखे। विंकगिरि श्रजिराम ॥ ए॥

॥ ढाख नवमी ॥

॥ रामचंड्रके बाग, चांपो मोरी रह्यो री ॥ ए देशी॥ ॥ त्र्यांबा चांपा केलि। रायण रुक वली री ॥ ना-क्षेरीने पूग। लोल लविंग लली री ॥ १ ॥ त्र्यगर तगर नारिंग। दामिम डाल खजूरी॥ नाग पुन्नाग प्रियंगु। करमदी फणस बीजूरी ॥ २ ॥ ताल तमाल हिताल। बोर कदंब हरी री।। चंबेसी रायवेसी। बहुफली फूली जरी री ॥ ३ ॥ वाघ सिंहनां रूप । सावर रोज ससा री॥ हरिण मानवनां रूप। साथें तेहवी वसा री॥ ४॥ रेवा जलमांहि जोर। गज बहु के लि करे री॥ निज निज टोला साथ। सालीर सरस चरे री॥ ए॥ मोहोटो काजल काय। जींते हाथी करे री ॥ सो हायणी परिवार । कुत्हल केलि करे री। ॥ ६॥ एक हाथणीने तेह। निज मुख कवल दीये री ॥ हाथणी छापे जेह । निज मुख कवल सीये री ॥७॥ ते हाथणीशुं नित्य। गजने प्रीति घणीरी॥ श्रन्य दिवस गंज राज। आवे ठाण जणी री ॥ ७ ॥ पाणी पीवा काज। गजथी दूर टली री ॥ रजसपणे गजराज। जाणे टोवें मली री॥ए॥ मदमातो गजराज । बेहु पखे दान करे री॥ देखी निज परिवार। मनमां गर्व धरे री ॥१०॥ मेहली गयो मुज नाह । खबर न कांइ करी री ॥ रोवे गजणी तेह । नयणां नीर जरी री ॥११॥ रेवा न-दीने तीर। उन्नी तेह रडेरी॥ जीनी जेखड साथ। खड हड तेह पडे री॥१२॥ पमतां सम ततकाल । तेहनां प्राण गया री॥ जद्रकपणाने जाव। ग्रुज परिणाम थ-

या री ॥ १३ ॥ इवे ते चित्रक राय। निज चतुराइ करी री ॥ गजणी पासें गज रूप । जुंइ पड्यानुं करे री ॥ ॥ १४ ॥ एहवो जींते जाव। खखीने तेह गयो री ॥ निज मंदिर जणी तेह । मनमां हर्ष थयो री ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ विंध्याचल रेवा नदी । तेहनां करी चित्राम ॥ घरे श्राव्यो पोता तणे । विण मागे तस दाम॥१॥हुउ चरित्र करतां थकां। अनुकरमें एक मास ॥ राज स-त्रायें त्रावीने। नृपने करे त्ररदास ॥ १॥ जाउं लाखा मंदिरें। जो तुम होय छादेश ॥ बीडुं छापी तेहनें। हुकम करे सुनरेश ॥३॥ त्र्याव्यो लाखा मंदिरें। जुगती-शुं करी जुहार॥ लाख टका त्रागल धरी। बोख्यो राज क्कमार॥४॥ व्याव्या दक्तिण देशथी। जोता पुर वन गाम ॥ सोपारापुर पाटणे। सुएयुं तमारुं नाम॥५॥तेणे का-रण जोवा जणी। तुम घरे कस्बो प्रवेश ॥ दर्शन दीवुं तुम तणुं। अमने हर्ष विशेष॥६॥ मंदिर दीवां तुम तणां। दीवुं तुम मुख नूर ॥ एम कहीने पाठो फरे। अमने थाय असूर॥ ७॥ लाला मनमां चिंत-वे । ए नर चतुर सुजाण ॥ घमी वे घडी जो ए रहे । तो मुज सफल विहाण ॥ ७ ॥ देखी तेहनी चातु- री। श्रने वसी वयण विखास ॥ चिकत थइ खाखा जिए । स्वामी सुणो अरदास ॥ ए ॥

॥ ढाल दशमी ॥ चोपाइनी देशीमां ॥

॥ लाखाना मंदिर जपरें। चित्रशाली नर एक चि-तरे ॥ खाखा बोसी सुण तुं त्रूप । जोवा सरिखां ज-पर रूप ॥ १ ॥ खाखानो ते साही हाथ । कुंवर कहे तमें आवो साथ। राजकुंवरने लाखा नार ॥ बेहु आ-व्यां साथे परिवार ॥१॥ चित्र देखीने करे वखाण । खाखा मनमां थइ हेराण ॥ दीवा करी साथें बे चार। खाखा निरखे वारो वार ॥३॥ विंध्याचलने रेवा नदी। हाथी नव विसारे कदी ॥ ए जोतां आवे जेटले। एक पोहोर वाग्यो तेटले॥४।।लाखा मनशुं थइ एकांत।चित्र जोवानी सबसी खांत। गज टोद्धं दीद्वं चितस्तुं। साखा मन जोवानुं कखुं ॥५॥ हाथी टोंबुं निरखी करी। मन इरखी खाखा सुंदरी॥गजणी साथें गज एक पड्यो । ते देखी कुंवर खम यड्यो ॥६॥ ध्रुजीने ते धरणी ढसे । खाखा नयणें व्यांसू फरे॥ पुरुष चरित्रनुं कीधुं तान। हु-र्जं अचेतन नाठी शान ॥ १ ॥ लाखा मनमां चिंते ए-म ॥ राजकुंवरने थार्च केम ॥ सज थावाना करे छपाय-। फ़ूल वींजणे वींजे वाय ॥ ७ ॥ उंसम वेसड की-

धां घणां । मंत्रयंत्रनी नहीं कांइ मणां ॥ एम करतां ते-हने उपचार। त्रण पहोर वाग्या तेणि वार ॥ए॥ खाखा-ने तव चिंता थइ। ए ग्रुं दैवें कीधुं जइ॥ त्रांख ज-घामी जोइ जाम । लाखा मनमां हरखी ताम॥१०॥ मुखे मेहसे मोहोटा निःश्वास । राजकुंवर मन चयुं जदास ॥ खाखा कहे खामी तमे सुणो। एहनो मुज श्चचंत्रो घणो ॥ ११॥ पोहोर त्रप्य वाग्या जेटले । राज-क़ुंवर बोख्यो तेटले॥ पूरव जव मुजने सांजस्त्यो। ए गज मरीने हुं श्रवतस्त्रो॥ १२॥ ते हाथणी मुज विर-हे मुइ । हुं नवि जाणुं कोण गति गइ॥ कहे खाखा सुणो कुमार । ते हाथणीनो मुज व्यवतार ॥ १३ ॥ लाखा कहे मुज हरख अपार, पूरवनो तुं मुज जर-तार ॥ मन दढ करीने पाट्युं शीख । तेणें कारण हुं पामी लील ॥ १४॥ मन मान्या मनोरय फल्या। मुह माग्या पासा मुज ढल्या ॥ हङ्मामां हे धरी घणो उत्साह। चिहुं कलरो की घो विवाह ॥ १५॥ **खाखा परणी मन रंग रखी । बेहुनी श्राशा सघ**खी वत्सराज ॥ १६ ॥ लाखाने ते तेडी करी। राजा त्रागल नेट बहु धरी ॥राजायें तस दीधुं राज।सबख वधारी

तेइनी खाज॥ १७॥ खाखाने तेमी निज पुरें। नित नित नवला उत्सव करे॥ लाखाने पटराणी करी। जाणे इं-डाणी अवतरी ॥ १०॥ पंच इंडियना विखसे जोग । सरखे सरखो खहे संयोग ॥ वत्सराज मोहोटो जूपाल। श्रहोनिश धर्म तणो हे ढाल ॥ १ए॥ लाखायें प्रसन्यो एक पुत्र। जे राखे निज घरतुं सूत्र ॥ पुत्र हुउं बहु गु-णनुं धाम। इंसराज तस दीधुं नाम॥१०॥ बीधुं राज्य प्रपंचें करी। जसनी वात जगमां विस्तरी॥ वत्सराज वे बुद्धि निधान। श्रनम सर्वे प्रणम्या राजान ॥११॥ एक दिन वत्सनृष खाखा नारि । वेह्र बेठां गोंख म-जार॥ वात विनोद करे मन रंग। हं जराज बेटो ज-त्संग ॥ २२ ॥ लाखा कहे स्वामी सुणो वात । शास्त्रें स्त्री चरित्र विख्यात ॥ श्रमेक शास्त्र दीठां में जएयां । पु-रुष चरित्र दीठां नवि सुएयां॥ १३॥ तव राजा मर-कलडे हस्यो। राणी कहे ए कारण किस्यो॥ कहे राजा तमें राणी सुणो। नर नारीथी अधिको गणो॥१४॥ पु-रुष चरित्र में बहु केखवी। में तुज प्रत्यें घणुं जोखवी ॥ तुजने पण में धूती खरी। परणीने पटराणी करी ॥ १५ ॥ तुज स्राव्ये स्राव्युं मुज राज । सिद्ध स्रयां मुज सघलां काज॥ वात पूरवनी मांनी कही। तेहना चित्तमां बेठी सही ॥ १६ ॥ वात सुणीने यह हेराण । खाखा नृपनां करे वखाण ॥ चतुराइ कीधी श्रति जली । मुज लाखानी श्राशा फली ॥ १९ ॥ कूड कपट में कीधां घणां। में धूतास्यां मन जन तणां ॥ मृषावादनां कीधां पाप । राणी श्रागले कहे निज पाप ॥ १० ॥ खाखा कहे स्वामी वक्वीर । दरियानी परें थया गंजीर ॥ एटला दिन तमें न कही वात । धन्य पिताने धन्य तुज मात ॥१ए॥ त्रण काल जिन पूजा करे । श्रहोनिश ध्यान धरमनुं धरे ॥ दानें पोषे पात्र श्रनेक । चतुराइ हे श्रधिक विवेक ॥ ३० ॥ श्रुत सागर नामें गणधार । ते हे विद्याना जंकार ॥ वन पालक श्रावीने कहे । ते निसुणि राजा गहगहे ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राजा सबल श्राडंबरें। तेकी सिव परिवार ॥ राजा गजश्री उतरी। प्रणमें वारोवार ॥ १॥ लाखा राणी रंगद्युं। प्रणमी गुरुना पाय ॥ श्रापोपुं धन्य मानती। बेठी रुडे ठाय ॥ १॥ जिव जनने हित कारणें। गणधर ये उपदेश ॥ राजा राणी सांजले। मन धरी धर्म विशेष ॥ ३॥

॥ ढाल अगीयारमी ॥ साहेलडीनी देशी ॥ ॥ इवे श्रावी निज मंदिरें॥ साहेखमी रे॥ राणीने कहे सुविचार तो ॥ इंसराज मोहोटो थयो॥सा०॥हवे ब्रीजें व्रतनार तो ॥ १ ॥ राज क्रिक्क सुख जोगव्यां ॥ सा० ॥ ते सवि पुएय पसाय तो ॥ धर्म कुटुंब य्या-वी मब्युं ॥ सा० ॥ राणी सुत सुखदाय तो ॥ २ ॥ जे श्रवसर नव उंखखे॥ सा०॥ ते नर कहीयें ग-मार तो ॥ श्रवसर श्राव्यो जाखवे ॥ सा० ॥ ते नर घर शणगार तो ॥ ३ ॥ शुज लग्ने शुज मुहूरतें ॥ सा ॥ राज्य थापी हंस राज ता॥ धर्मे धन खरची घणुं ॥ सा० ॥ त्रत खीए नृप वत्सराज तो ॥ ४ ॥ खाखा पण व्रत **ऋादरे ॥ सा० ॥ बहु नारीनी सा**थ तो॥ माया ममता परहरी॥सा०॥ खोच करे निज हाथ तो ॥ ५ ॥ निज गुरुनी सेवा करे ॥ सा० ॥ जणी-यां श्रंग श्रग्यार तो॥ जूजयां बुजयां उगस्यां ॥सा०॥ सफल कीधो श्रवतार तो ॥ ६ ॥ श्रति माहापण जाणी करी॥ सा० ॥ सोंप्यो गञ्जनो जार तो ॥ बहु परिवारें परवस्था ॥सा० ॥ करे श्रनियत विहार तो ॥ ॥ अ ॥ चतुराइ एहनी खरी॥ सा० ॥ साध्युं त्रातम काज तो ॥ वेइडे अणसण आदरी ॥साव ॥ मुक्ति

पोहोता क्षिराज तो ॥ ए ॥ खाखा पण तप जप क-री ॥ सा०॥ पोहोती स्वर्ग मजार तो ॥ अवसर सघ-खो साचवे ॥ सा० ॥ सुणजो सहु नर नार तो ॥ए॥ गणिकाने कुल उपनी ॥सा०॥ पामी धन यौवन्न तो ॥ धन्य ते लाखा सुंदरी ॥ सा० ॥ राख्युं शील रतन्न तो ॥ १० ॥ जत्तमना गुण गावतां ॥ सा०॥ प्रह जग-मते सूर तो॥ एम जाणी में वरणव्या ॥साणा खाखा-ना गुण पूर तो ॥ ११ ॥ पंकितें तेह वखाणीयें ॥सा०॥ जे होय श्रवसर जाण तो॥ श्रवसर श्राव्यो जालवे ॥ सा० ॥ ते कहीएं चतुर सुजाण तो ॥ ११ ॥ कप्पम वाणिज्यमांहे रही ॥ सा० ॥ में कह्युं पुरुष चरित्र तो ॥ लाखानी पण वारता ॥ साणा मंगलें कही सुवि-चित्र तो ॥१३॥ श्री विजयसेन सूरीसरु ॥सा०॥ तपगन्न-नो शणगार तो ॥ तेइने राजे रंगें करी ॥सा०॥ वात कही सुविचार तो ॥ १४ ॥ श्रीविजयदान सूरीसरु ॥साव।। उत्तम जेहनुं नाम तो ॥ मुनिवरमांहे वखाणी षं ॥ सा॰ ॥ जाग्यवंत गुणधाम तो ॥ १५ ॥ तेहना शिष्य सोहंकरु ॥सा०॥ श्रीराजविमल उवजाय तो ॥ तेहना शिष्य वखाणीएं ॥सा०॥श्री मुनि विजय **उव**न जाय तो ॥१६॥ तेइना शिष्य सोहामणा ॥सा०॥संवेगी

शिरदार तो ॥ श्री देवविजय वाचक वना ॥ सा०॥ उस वंश शिणगार तो ॥ १९॥ उस वंश कुलें उपना ॥ सा० ॥ निज गुरुने सुखदायी तो ॥ श्रीमानविजय पंडित वरु ॥ सा०॥ दोलत श्रिधकी सवाइ तो ॥ १०॥ गुरुनामें सुख उपजे ॥ सा० ॥ मित बुद्धि सघली श्रावि तो ॥ तस शिष्य दी प्तिविजय जलो ॥ सा०॥ रास रच्यो शुज जाव ता ॥ १०॥ निज शिष्य धीर विजयतणुं ॥ सा० ॥ वांचवानुं मन जाणी तो ॥ रास रच्यो रिखयामणो ॥ सा० ॥ मनमां उलट श्राणी तो ॥ १० ॥ संवत सत्तरें जाणजो ॥ सा० ॥ वरस ते उगण पद्यास तो ॥ श्राशो शुदि पूनम दिनें ॥ सा०॥ ए में की थो रास तो ॥ ११ ॥

॥ इतिश्री मंगल कलशरासे पुरुषचारत्र लाखा शीलवर्णनोनाम द्वितीय खंडः संपूर्णः ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

॥ उक्कोणी नगरी तणी। (अने) चांपापुरीनी जेह ॥
मृत्वथकी पोता तणी। वात कही सवि तेह ॥ १ ॥
सुरसुंदर राजा तणी। त्रैलोक्यसुंदरी नाम ॥ में जाने
परणी करी। मूकी आव्यो आम ॥१॥ वात सुणी ह-

रखी घणुं। करी कारिमो क्रोध ॥ एइने बांधी रा-खजो। जे होय सबलो जोध ॥३॥ जय च्रांत नीशा-**लिया । नाठा दह दिशें जाय ॥ धनदत्तसाहें सांज**ब्युं । करे ते हाय वराय ॥४॥ एह श्रमारा घर तणी। एह-वी हलवी वात ॥ करे विटलज वाणीयो। एहने मारो लात ॥५॥ सुन्नट सघला तिहां धस्या। साहवाने तत-काल ॥ सामंतने कहे सुंदरी । तमें साहो सुकुमाल ॥६॥ मंगल मन बीहिनो घणो । (मुज) पूरव लाग्यां पाप ॥ है है ए छुं थायरो । रोरो मायने बाप ॥७॥ हाथ जालीनें कुमरनो।सुंदरीने सामंत॥ ए त्रणे उपर च-ढ्यां । उरडामांहि एकांत ॥ ७॥ सुंदरी कहे सामंतने । सुणजो तमें निरधार ॥ जे में परएयो प्रेमग्रं। ते सहि ए जरतार॥ ए॥ जार्र तमें एहने घरे। यो वधामणी सार ॥ मात पिताने सुख करी । श्राणो पंच तुखार ॥ ॥ १०॥ सामंतने तस मंदिरें, वरतावी जयकार ॥ रथजूषण राजा तणा । लावो पंच तुखार ॥११ ॥

॥ ढाल पेहेली ॥ बिंदलीनी देशी ॥

॥ सिंह सामंत एम बोखे। सुंदरी नहीं कोइ तुम तोखे हो ॥ सुंदरी वयण सुणो ॥ तुम हैमानो नहीं पार, तमें बुद्धि तणां जंमार हो ॥ सुं० ॥ १ ॥ एटला

दिन ठानुं राख्युं । हवे मुज व्यागक्षे तमें जाख्युं हो ॥ सुं ॥ तमे मुजने जस बहु दीधुं, पोतानुं कारज सीधुं हो ॥ सुं० ॥ २ ॥ तमें दासी ली उद्यावीश । जे खीजमत करे निश दीस हो ॥ सुं० ॥ हवे मेह-खो तमे नरवेश, पहेरो कामिनीनो वेश हो।। सुं ।। ॥ ३ ॥ तेणी वेला तेणी वार । सुंदरीये कीधो शणगार हो ॥ सुं ।। सासु ससरा पासें आवे । जरी थाल मो-तीडे वधावे हो ॥ सुं०॥४॥देखी सासु ससरो मन हरषें। हरखें श्रांसुमां वरसे हो ॥सुं०॥ राजाएं क-रीय प्रसाद । दीधा मोहन प्रासाद हो ॥सुं०॥५॥ ख-ही मातानो श्रादेश । ते मोहलें करे प्रवेश हो ॥सुं०॥ हवे विषय तणा सुख विखसे। तन मन तेहनुं वखी जब्लसे हो ॥ सुं० ॥६॥ पुष्यें महयो संयोग । पुष्यें मन वंबित जोग हो ॥सुं०॥ कीजें पर उपगार। पाम्यानुं पृहिज सार हो ॥ सुं० ॥ ७ ॥ घर सारुं दानज दीजें । मानवजन खाहो लीजें हो ॥सुं०॥ पुएयें छाने चतु-राई । पुण्यें विखसे ठकुराइ हो ॥सुं०॥७॥ धनदत्त सुत नित्यमेव । करे मात पितानी सेव हो ॥ सुं०॥ नृप त-नया घर काज । करती नाणे मन लाज हो।।सु०।।ए।। हवे धनवती धनो साह। नित धरम करे उन्नाह हो॥ ॥ सुं० ॥ धरम कुटुंब सहु मिल छं। परजवनुं पुण्य फिल युं हो ॥ सुं० ॥ १०॥ ते सासु तणे परिवारें। दिन प्रतें देव जहारे हो ॥ सुं० ॥ मुनिवरने दीए दान। ग्रुद्ध जावें पठें जमे धान हो ॥ सुं०॥ ११ ॥ छत्तम कुल स्यनुसारें। धरणीधर लाज वधारे हो ॥ सुं० ॥ दी तिवि-जय एम बोले। नहीं को इ गुण्वंतने तोले हो ॥ सुं० ११

॥ दोहा ॥

॥ त्रापी सिंह सामंतने । पुरुष तणो ते वेश ॥ यो मा हाथी दत्तना । मोकलावे निज देश ॥ १ ॥ मिणमय थाली वाटका । रथ जूषण जे दान ॥ ए देज्यो मुज तातने । एम कही कुंवरी निधान ॥ १ ॥ धनदत्त सुत कागल लखे । देश बहु जपमान ॥ सिंह कहे ते मानजो । तमें हो बुद्धिनिधान ॥३॥ संप्रेमवाने निसन्द्या । नारीने जरतार ॥ सिंह सामंतने सोंपीया । साथें बहु परिवार ॥ ४ ॥ कुंकुमनुं टी खं करी । श्रापी श्रीफल सार ॥ नृप तनया एम वीनवे । नांखे श्रांसू धार ॥ ए॥

॥ ढाख बीजी॥ जावननी ॥ कागसीयो किर-तार जणी। शी परें खखुं रे ॥ ए देशी॥ ॥ चंपापुरीना देव जुहारजो रे। तिहां क्षेजो मु- ज नाम ॥ पढे राजापासं जाइने रे । करजो चरण प्रणाम ॥ १ ॥ सिंह सामंतने कुंवरी वीनवे रे।कहे-जो मुज आशीष॥पीयरीयां मुज क्रण क्रण सांजरेरे। ते जाणे जगदीश ॥१॥ सिं० ॥ ए आंकणी ॥ घोमा हाथी नजरेंदेखामजो रे। कहेजो सकल विचार॥ वली कहेजो तमें मारा तातनें रे। तम पुण्यें मख्यो जरतार ॥३॥ सिं०॥ माहारी माताने पगे खागीने रे। कहेजो एक संदेश॥ मात प्रसादें मुज सुख उप-न्युं रे। डुःखरुं नहीं खबसेश ॥ ४॥ सिंज्॥ धन्य वेला वली धन्य तेहर्ज घडी रे। जे नजरें देखीश माय॥ संकट आवे राखी रुडी परें रे। ते केम मात विस-राय ॥ ए ॥ सिं० ॥ बीजी सघली उरमान मायने रे। कहेजो तमें आशीष॥ तेह तणा गुण मुजने सांजरे रे। संजारं निशदीस ॥६॥ सिं० ॥ सहियर सघली-ने सुख पूछजो रे। कहेजो कुशल ने खेम॥ मुज है-डाथी तमें नवि वीसरो रे। तमें धरजो बहु प्रेम॥९॥ ॥ सिं० ॥ हुं अन्नागिणी सरजी पापणी रे। नहीं मुज बांधव कोय । जे बांधव छावे मुज तेमवा रे । हरख धरीने सोय ॥ ७ ॥ सिं० ॥ तमें तिहां जइ श्राणुं मोकलावजो रे।पियर श्रावे चित्त॥सिंहजी सूडा

जला निज देशना रे। नहीं परदेशी मित्त ॥ ए॥ ॥ सिं० ॥ सिंइ सामंत इवे तिहां थी सिद्धि करे रे। **छा**ठ्यो चंपावती मांहि ॥ राजा सुरसुंदरने नेटियो रे। हैडे घणो उत्साह ॥ १० ॥ सिं० ॥ सहुने दीधी रुनी वधामणी रे। हरख्यो सवि परिवार । पुरुषवेष श्राप्यो कुमरी तणो रे । देखाड्या तृखार ॥ ११ ॥ सिंग। दिन दश राखी राजा वीनवे रे ॥ तमें सिक्त करो उज्जेण ॥ मंगल जमाइ अने मुज नंदी-नी रे। तेमवा कारण तेण ॥ ११ ॥ सिंज ॥ क्षेत्र व-धामणी सिंह सामंत वख्यो रे। जक्कोणी नणी ताम॥ वाटें जातां शकुन जला थया रे। मन हरख्यो श्र-जिराम ॥१३॥ सिं० ॥ त्र्यनुक्रमें त्र्याव्या नयरी उक्के-णीएं रे। धनदत्त साहने गेहे ॥ धनदत्तसाह सुत सह श्चावी मख्या रे । नृप कुंवरी ग्रुणगेह ॥ १४ ॥ सिं**० ॥** नृप कुंवरी मनमां हरखी घणुं रे। निसुणी श्राणानी वात । हवे मखशुं जइने निज तातने रे । वली न-जरें देखिश मात ॥ १५ ॥ सिं०॥

॥ दोहा ॥

॥ धनदत्तसाहने वीनवे। सिंह नामें सामंत ॥ वहू सहित तमे मोकलो। तुम बेटो गुणवंत॥ १ ॥ तुम

सुत मुख जोवा तणे। राजाने बहु कोम ॥ ते माटे तमे मोकलो । विनति करुं कर जोम ॥ १ ॥ दोतें तव तिहां हा जणी। सुतनुं जाणी मन्न ॥ एहने सुमनें राखजो। करजो पुत्र जतन्न ॥३॥ सुरसुंदर राजा प्रतें। कह्यो घणो जूहार॥ मली करी वेहेला इहां।पधार-जो निरधार ॥४॥वैरिसिंह राजा प्रतें, मंगल मलवा जाय ॥ श्राङ्गा मागी तेहनी । नम्या तातने माय ॥ ॥ ५ ॥ माताने चरणे नम्यो । माता दिये श्राशीष ॥ पुत्रजी वेहेखा ञ्यावजो । वहू सहित सुजगीश ॥६॥ जला शकुन लेइ करी। ग्रुजलेंगनें ग्रुजवार ॥ चंपावती नगरी जिहां । श्राव्या हरष श्रपार ॥ ७ ॥ ॥ ढाल त्रीजी ॥ रे वेल विवला नेमजी ॥ ए देशी ॥ ॥ वात सुणी मन हरखीयो । सुरसुंदर राजानो रे हो ॥सामै युं सबहुं करें।गोरी करें गीतगानो रे हो॥१॥ संदेर सवे राणगारीयुं। राणगास्यो बाजारो रे हो। घर घर हुआं वधामणां। जाट जणे जयकारो रे हो॥वा० ॥२॥ स्वदेशनां परदेशनां । नरनारीनां वृंदो रे हो । धन दत्त सुतने निरखवा। जपन्यो स्रति स्रानंदो रेहो॥

वा० ॥ ३॥ मंगल गजधी जतस्वो । नृपने कीधोप्र-

णामो रे हो ॥ मंगलकलशने देखीने। नृप मन इ-

रख्यो तामो रे हो ॥ वा० ॥ ४ ॥ निज घरमांहि प-धरावीयो। वाजंते निशाणो रे हो ॥ कुंवरी कलंक ज-तारीयं। वर्त्यो जयजयकारो रे हो ॥ वा० ॥ ५ ॥ कु-बुद्धिने मारवा तणो। राजायें दीधो आदेशो रे हो॥ धनदत्त सुतें मूकावीयो । जत्तम पुरुष सुविशेषोरे हो ॥ वा० ॥ ६ ॥ यतः ॥ उत्तम स्रतिहि पराजव्यो।है-डे न धरे डंश ॥ वेद्यो जेद्यो घुहव्यो। मधुरो वाजे वंश ॥ १॥ सज्जन ते सही जाणजो। जो रुसे सो वार। श्रंब न होवे खींबमों। जे जाति सहकार॥१॥श्र-गर तणे श्रनुसार। पीलंतां परिमल दीये ॥ ते सज्जन संसार। जोया पण दीसे नहिं॥३॥ ढाल पूर्वेसी॥ स-मिकत धारी जे होवे। तेतो सूधुं विचारे रे हो ॥ जी-वने सुख डुःख उपजे। कर्मतेणे श्रनुसारें रे हो॥ वाण।।।।। नृप कहे एह कुबुद्धिनुं। मुख दीवे बहु पा-पोरे हो ॥ विण श्रवगुण ते पापीयेँ । कुंवरीने कीध संतापों रे हो । वाण।।।।। ते माटे अम देशमां। रहेवुं न पामे एहो रे हो ॥ सुरसुंदरें निज देशथी । काळ्यो साही तेहों रे हो ॥ वा०॥ ए॥ हवे अपुत्री ह नृप चिंतवे। देइ मंगलकलशने राज्य रेहो॥ पंच महाव्रत श्रादरी। साधुं श्रातम काज रे हो॥ वा०॥१०॥ धनद-

त्तशाह अने धनवती। रापरिवार तेडावी रेहो॥ व्रत क्षेवाने सक्क थयो। सहुनुं मन्तुं मनावी रे हो॥वा० ॥ ११ ॥ मंगल कलशने प्रेमशुं । थाप्यो पोताने पाटें रे हो । सुरसुंदर राजा जणे। तुमें चालजो धर्मनी वाटें रे हो ॥ वा० ॥११॥ श्रीयशोजड सूरि कने । नृप व्रत खीए जन्नरंगें रे हो। धनदत्त शाहने धनवती। तेह पण व्रत लीये रंगें रे हो ॥ वा० ॥ १३ ॥ गुरु आदेश लही करी। सुरसुंदर ऋषिराय रे हो ॥ तीरथ यात्रा कर-वा जणी। ते परदेशें जाय रे हो ॥ वा० ॥ १४॥ न-गर पिंमोल ते यह रहे । ते केम कहीयें साधो रे हो ॥ एक ठामें रहेतां थकां । थाये संजमनो बाधो रे हो ॥ वा० ॥ १५ ॥ राणी त्रैलोक्यसुंदरी । पुष्यव-ती श्रजिरामो रे हो ॥ प्रसच्यो पुत्र पुरंदर। जय-शेखर जस नामो रे हो ॥ वा० ॥ १६ ॥ वत लीधं सुरसुंदरे। देइ मंगलने राज्यो रेहो॥सीमाना राजा कहे । ए द्युं कीघुं त्र्यकाजो रे हो ॥ वा० ॥ १७ ॥ ए पर-देशी वाणियो। अंग देशनो रायो रे हो॥ नाम धरावे एहवुं । अम जीवित घिग थायो रे हो ॥ वाणारणा

॥ दोहा ॥

॥ अंग देश खेवा जणी। आब्या मोहोटा राय ॥

कटक सहु जेब्रुं करी। मंगजने नमवाय ॥ १ ॥सिं-ह नाम सामंतने। कीधो वम राजान॥ त्रागल कीधो तेहने। देइ बहु छादरमान ॥१॥ गुर्जर मरुधर मा-खवो । मेवाडना जूपाल ॥ धनदत्त सुतने सवि **म**-ख्या। श्रापी सार रसाख ॥ ३ ॥ धनदत्त सुत वज-मावियो । जाइव नाम निशाण ॥ थरहर कांपे तव थरा । कायर कंपे प्राण ॥ ४ ॥ मोरच रचिया जली परें। उंचा मुंगर जेम ॥ नाख चढावी उपरें। शूर तणे मन प्रेम ॥ ५ ॥ पूजी श्रीजगवंतने । प्रणमी श्री-गुरुपाय ॥ ध्यान धरी जगवंतनुं । ते ने श्रावक राय ॥६॥ महामूख्य मोहोटो ऋछे। घोडो जलिघ तरंग॥ मंगल नृप उपर चढ्यो । श्राणी मननो रंग ॥ ७॥ फोजें फोज सामी मखी। तव वाग्यां रणतूर ॥ मंग-ल कलश तेणें श्रटकस्यो । जाणे उग्यो सूर ॥ ७ ॥ रूप देखी मंगल तणुं। ते प्रणम्या जूपाल ॥ ततक्षण ते पाठा फस्चा । श्रापी सार रसाल ॥ए॥ हवे श्रावी निज मंदिरें। मंगाव्या प्रासाद ॥ रात्रुकार मंडावि-या । हुर्उ ते जयजयकार ॥१०॥ श्री विजयसिंह सूरी-सरु । समवसस्या जद्यान ॥ बहु परिवारें परवस्या । ते हे ज्ञान निधान ॥ ११ ॥

(৫০)

॥ ढाल चोथी ॥ राग गोमी ॥

॥ सबल आमंबर सज करी। जवि प्राणी रे ॥ तेरी सवि परिवार । खाल जवि प्राणी रे ॥ त्र्याव्या सहगुरु वांदवा ॥ ज० ॥ पहेरी सवि शणगार ॥ ला० ॥ १॥ पांचे अजिगम सांचवी ॥ जवि० ॥ वांचा श्रीगुरु पाय ॥ ला० ॥ प्रणमी वली बहु साधुनें ॥ त्रण।। बेठा रूडे ठाय।। लाण।१॥ श्री सिंहसूरि उपदिसे ॥ त्र०॥ जाणी सरल खत्राव ॥ ला० ॥ साकर म-धुरी वाणीयें ॥ जा ॥ दान शीयल तप जाव ॥ लाव ॥ ३ ॥ धर्मनी देशना सांजली ॥ ज० ॥ हरख्यो मन त्रूपाल ॥ ला० ॥ जैन धर्म मनमां वस्यो ॥ ज० ॥ जीवदया प्रतिपाल ॥ ला० ॥ ४ ॥ कर जोमी उजो रहे ॥ज्ञा पूछे मंगल नरेश॥ लाव ॥ विवाहनी विमं-वना ॥ज्ञा पामी केण विशेष ॥ खा ।।।।।। नामें त्रेखो-क्यसुंदरी ॥ज्ञा मुज प्रिया विण वंक ॥ ला० ॥कर्म कठण कीधां किस्यां ॥जा जे पामी एह कलंक ॥लाव ॥६॥ सूरि कहे राजा सुणो ॥ ज०॥ पूर्व जवनी वात ।।ला।। विण सांजहये ए कर्मनी।।जा। कथा न आवे धात ॥ ला० ॥७॥ अंगें आलस परिहरो, सुण राजन रे॥ पूरव जव वृत्तांत ॥ लाल सुण राजन रे ॥ पुण्य

कीधुं ते वखाणीयें ॥ सु० ॥ मूकी मननी च्रांति ॥ लाण ॥ ए ॥ दक्षिण जरतें जाणियें ॥ सुण ॥ किति-त्रतिष्ठित नाम ॥खाण।पाटण मोहोटुं वखाणीयें॥सुण। क्रेंद्रं करी अनिराम ॥खाणाए॥ सोमचंद तिणें पाटणे ॥सुण। एक रहे कुलपुत्र ॥सा० ॥ शूरचंद तेहना पिता ॥सुगा राखे घरनुं सूत्र॥खाणारणा श्रीदेवी तस जार-जा ॥ सु० ॥ दंपती प्रीति श्रपार ॥ खा० ॥ चतुराइ तास वखाणीयें ॥ सु० ॥ जेहने वश जरतार ॥खा० ॥ ११ ॥ सरख खजावें पण करी ॥ सु॰ ॥ माने सह तस लोक ॥ ला० ॥ धरमने ठामें वावरे ॥सु०॥ बहु सोनइया रोक ॥ला० ॥ १२ ॥ तेह पाटणमां जाणीयें ॥सुगा सुश्रावक जिनदेव नाम ॥ खाण्॥ ते बेहुनुं मन एक हे ॥ सु॰ ॥ जेम खखमणने राम ॥ खा॰ ॥ ४३॥ पूर्वेद्धं पण बहु श्रहे ॥ सुणाजिनदेवने बहु धन्न ॥खाणा ब्रह्म वली उपराजवा ॥सु०॥ वाहण चढवानुं मन्न॥ लाणारधा एक दिन ते सोमचंडने ॥ सुण्॥ मित्रने कहे मन वात॥खा०॥ परदेशें मनसा खाने ॥ सु०॥ **बे ग्रुद्ध सुजात ॥ खा॰ ॥ १५ ॥ सोन**इया मुज रोकमा ॥ सु० ॥ सोंपुं बार इजार ॥ ला० ॥ विश्वास जाणी मित्रनो ॥सु०॥ धर्म बांधव तुं सार ॥खा०॥१६॥

(56)

ए धन माहारुं तुं सिह ॥ सु० ॥ वावरजे ग्रुज ठाम ॥ ला० ॥ लाज घणो हे तुमने ॥ सु० ॥ ए हे उत्तम काम ॥ खा० ॥ १७ ॥ ते धन सोंपी मित्रने ॥ स्र०॥ तेणे सिद्धि करी परदेश ॥ लाण ॥ जिनदेव सरिखो को नहीं ॥सु०॥ ऐ ऐ पुरुष विशेष ॥ खा० ॥ १० ॥ मानव जव लाहो लीजीयें ॥ सु०॥ देइ दान सुपात्र ॥ ला०॥ सोमचंड अनुमोदतो ॥सुणाकरे निज निर्मल गात्र॥ खाणारणा सोमचंद्र नर सारिखो॥ सुणा कोडिमांहि कोइ एक ॥खा०॥ होय के न होय नहीं ॥ सु॰ ॥ ते सुण-जो सुविवेक ॥ खाणाश्णा जिनदेवनुं धन वावरे ॥सुणा मन नाणे श्रहंकार ॥ लाण ॥ निज मित्रने श्रनुमो-दतो ॥ स्र० ॥ परने करे उपगार ॥ सा० ॥ २१ ॥ घर सारुं धन वावरे ॥ सु० ॥ पोतानुं पण सार ॥ ॥ ला० ॥ जैन धर्म वली श्रादरे ॥ सु० ॥ नारीने त्ररतार ॥ खा॰ ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीदेवी मन चिंतवे। धन्य ए मुज जरतार॥ धन्य जिनदेव वखाणीयें। जैन धरम जग सार॥१॥ नंद शेवनी दीकरी। देवदत्तनी नारि। ते पण एहिज पाटणे। जडानामें नारि॥१॥ श्रीदेवीने सखिपणुं। घणुं ते जड़ा साथ ॥ जड़ा पण नेहें करी । मन आपे तस हाथ ॥३॥ देवदत्तना देहमां। रक्तिपत्तनो रोग ॥ व्याप्यो करम तणे वशें। जड़ा करे बहुशोक ॥ ४॥ श्रीदेवी आगल कहे । कोढी हुर्ड जरतार॥ हवे बाइ शुं कीजीएं। ए डुःखनो नहीं पार ॥ ५॥ ॥ ढाल पांचमी ॥ राग केदारो गोमी ॥

॥ मुह मचकोडीने कहे रे। जदाने तेणी वार ॥ देवदत्तने तुज संगश्री रे। जपन्यो रक्त विकार रे ॥१॥ बेहेनी॥ म करीश मुजशुं वात। वेगली रहे कर सात रे ॥ वे० ॥ निहं जलो ताहारो संघात रे ॥ वे०॥ वंट्युं ताहारं गात्र रे॥ बेहेनी॥ म०॥ १॥ जडाने तव उपन्यो रे। मनमां घणो विखवाद ॥ ते चिंतवे एइ हुं खवे रे।मन श्राणी जन्माद रे॥बहेनी० म० ॥ ३॥ उठी ते श्रामण दूमणी रे। नयणें फरंती नीर॥ वलती बोलावी हरखशुं रे। कांइ बाइ हुइ दि-लगीर रे॥बेहे० मणाधानदा कहे तुज नवि घटे रे।एडू-वो कहेवो बोल॥श्री कहे में हांसी करी रे। तुज तनु कुं-कुम घोल रे।।बहे०मण।।।।श्रीदेवीयं ततक्रणें रे।बेसारी धरी बांहि॥ माहरे तुं सहि जाणजो रे। वाव्ही न-गरी मांहि रे ॥ बहै० म० ॥६ ॥ रोषहतो ते उतस्वो

(50)

रे। विलय गयो विखवाद॥ श्रीयें करम बाध्युं हतुं रे। तेहनो रह्यो सवाद रे॥बहे०म०॥९॥ जीव बांधे ते श्रित घणुं रे। रसनाथी बहु कर्म ॥ जेणें रसनाने वरो करी रे।तेहने पोते धर्म रे॥बहे०म०॥०॥ जे पंचेंडिय वश करेरे। तेहने लागुं पाय॥ दी सिविजय कहे जा-णजो रे। तेहने बहु सुख थाय रे॥ बहे०म०॥ ए॥

॥ दोहा ॥

॥ मुनिवरना संजोगशी॥पामी समिकत सार॥
ते पासे बेहु जणां। श्रावकना व्यवहार॥१॥ श्रातिह

ग्रुज जावें करी। ते पोहोतां परलोक ॥ पंच पल्योपम

श्राठखे। सौधमें सुरलोक ॥१॥ सौधमां देवलोकशी।
सोमचंद्रनो जीव॥ चवीने तुं जूपति हुर्ज । पुण्यवंत

श्रतीव॥३॥ देवीनुं सुख जोगवी। पूरण पूरी श्राय॥
श्रीदेवीनो जीव ते। त्रैलोक्यसुंदरी थाय॥४॥ परद्र
हयें जपराजीयुं। पुण्य घणुं गुण खाण॥ जाडे परणी
सुंदरी।ते तुं सिह करी जाण॥५॥ हांसीयें पहे ले जवे।
वयण कह्युं विण वंक॥ ते माटे ए सुंदरी। पामी मोहो दुं कलंक॥६॥ रुमां जीवडा। जे हसतां बांधे
कर्म॥ ग्रुज श्रगुज ते जोगवे। साचो श्रीजिन धर्म॥९॥

(তেখ)

॥ ढाल वर्छी ॥ साहेलडीनी देशी ॥ ॥ देशना सुणी मन हरखीयो ॥ साहेखडी रे। मं-गत्नकलश जूपाल तो ॥ त्र्याजुनो मुज दिन जलो॥ सा० ॥ सांजख्यां वयण रसाख तो ॥ १॥ वांदी निज घरे श्रावीया ॥ सा० ॥ मन श्राव्यो वैराग तो । ए संसार हे कारिमो ॥ सा० ॥ साचो धर्म वीतराग तो ॥ १ ॥ इरख धरी धन वावरी ॥ सा० ॥ करें पोता-नुं काज तो ॥ जयशेखरने तव दीये ॥ सा० ॥ चं-पावती तुं राज तो ॥३॥ सिंहसूरि पासें खीये ॥सा०॥ पंच महात्रत जार तो॥ श्रति उत्सव श्रामंबरें॥सा० ॥ नर वसी एक हजार तो ॥ ४ ॥ श्रीगुरुनी सेवा करे ॥ सा० ॥ तेणें जप्यां श्रंग श्रग्यार तो ॥ योग्य जाणी पदवी दीये ॥ सा० ॥ सिंहसूरि गणधार तो ॥ ५ ॥ सुखिया जीव ते सुख बहे ॥ सा० ॥ ते सही पुण्य प्रमाण तो ॥ पुण्यवंतनां सह करे ॥ सा० ॥ जगमां सबल वखाण तो ॥ ६ ॥ सुंदरी पण दीका खीये ॥ सा**० ॥ हरखे नृपने साथ तो ॥ बहु नारी** छुं परवरी ॥ सा० ॥ लोच करे निज हाथ तो ॥ ७ ॥ चतुर ते तैहने जाणीयें ॥ सा० ॥ जे व्यव सरनो जाण तो ॥ संसारी सुख विलसी करी ॥ सा० ॥ संजम लीये गुण्याण तो ॥ ए ॥ संजम पाली निः र्में ॥ सा० ॥ पोहोता ब्रह्मसुरखोक तो ॥ तिहांची चवीने उपज्या॥ सा०॥ पाम्या नरत्रव थोक तो ॥ए॥ तिहां पण दीका क्षेत्र करी ॥सा० ॥ पामशे केवल नाण तो। अनुकरमें मुगतें गया ॥सा०॥ तेहनुं करवुं वखाण तो ॥ १०॥ ग्रुणवंतना ग्रुण गाइयें ॥साज ॥ जाखे श्री जगवंत तो। निर्मेख थाये आतमा॥ सा ॥ पामीयें सुख अनंत तो ॥ ११ ॥ श्रीमंगल-कलश सूरी तणो ॥ सा० ॥ रास रच्यो सुविलास तो ॥ त्रणे गणे जे सांत्रक्षे ॥ सा० ॥ जेम होय परम विखास तो ॥ १२ ॥ रास करंतां एइनो ॥ सा० ॥ मुज मन अति रंगरोख तो॥ कहेतां रंग मुज उपन्यो ॥ सा॰ ॥ जेम मजीठनो चोल तो ॥ १३ ॥ सुपन मांहि गज उपरें ॥ सा०॥ बेठा हुइ क्रिक्क राज्य तो ॥ तेम ए रास करतां थकां ॥ साव ॥ सिद्धि चढे सवि काज तो॥१४॥ श्रीविमखबोध सूरीश्वरें ॥सा०॥ दीधो ए उपदेश तो ॥ शांतिनाथ पहें हो जवें ॥ सा०॥ श्रीखेण नामे नरेश तो ॥१५॥ ते श्रागल मन रंगशुं ॥ सा ॥ संबंध कह्यो सुरसाल तो ॥ शांतिनाथ पहे-क्षे जर्वे ॥ सा० ॥ मंगलकलश ज्रूपाल तो ॥ १६ ॥ जैन धर्म श्राराधियो ॥ सा० ॥ साखां श्रातम काज तो ॥ परमानंद पद पामीयो ॥ सा० ॥ जागवी बहु दिन राज तो ॥ १९ ॥ धन सारथवाहें साधुने ॥ सा० ॥ दीधुं श्रदेशक दान तो । तीर्थंकर पदवी खही ॥ सा० ॥ इंद्र करें बहु मान हो ॥ १० ॥ यतः॥ जैनधर्म समाराध्य । जूत्वा विजवजाजनं ॥ प्राप्ताः सिक्षिसुलं होते । श्राध्या मंगलकं ज्ञावत् ॥ १ए ॥ ॥ ढाल सातमी ॥ म म करो मायारे काया कारमी ॥ ए देशी ॥

॥ पुण्य करो तमें प्राणीया। पुण्ये नवे निधान रे।
पुण्यथी सिव सुख उपजे। गहुंथी जेम पकान्न रे
॥ १ ॥ पुण्य० ॥ श्रीविजयमान सूरीसह। तपगञ्चनो शणगार रे ॥ तेहने राज्ये रंगें करी। रास रच्यो
सुविचार रे ॥ १ ॥ पु० ॥ श्रीविजयदान सूरीसह।
उत्तम जेहनुं नाम रे ॥ मुनिवरमांहे वखाणीयें।
ज्ञाग्यवंत गुणधाम रे ॥ ३ ॥ पु० ॥ तेहना शिष्य
सुहं कह। श्रीराजविमल जवकाय रे। तेहना शिष्य
वखाणीयें। श्रीमुनिविजय जवकाय रे ॥ ४ ॥ पु० ॥
तेहना शिष्य वखाणीयें। संवेगी शिरदार रे। श्रीदेवविजय वाचक वह। उस वंस शणगार रे॥ ४ ॥

(ছে)

पु०॥ प्राग वंश कुल उपना। निज गुरुने सुलदायी
रे॥ श्रीमानविजय पंडित वरु। दोलत श्रिविकी सवाइ रे॥ ६॥ पु०॥ गुरु नामे सुल उपजे। मनें
बुद्धि सघली श्रावे रे। दीितिविजय सुल कारणें।
रास रच्यो शुक्त नीवें रे॥ १॥ पु०॥ निज शिष्य
धीर विजयतणुं। वांचवानुं मन जाणी रे॥ रास
रच्यो रलीयामण्डे। मनमांहि जलट श्राणी रे॥ रास
रच्यो रलीयामण्डे। मनमांहि जलट श्राणी रे॥
पु०॥ संवत सतरें जाणजो। वरस ते निगणपचासो रे॥
जाणे गणे जे सांजले। किन दीितनी फलजो श्राशो
रे॥ ए॥ पु०॥ इति श्रीमंगलकलशरासे तृतीयः
खंमः समाप्तः॥ १॥ समाप्तोयं मंगलकलशरासः॥



